केन्द्रीय विद्यालय संगठन, गुवाहाटी संभाग

विशेष अध्ययन सामग्री, सत्र- 2015-16

विषय- हिंदी (केन्द्रिक), कक्षा - बारहवीं

मुख्य संरक्षक

श्री संतोष कुमार मल्ल, भा॰प्र॰से॰

आयुक्त, (के.वि.सं, नई दिल्ली)

संरक्षक

श्री सी. नीलाप

उपायुक्त, (के.वि.सं, गुवाहाटी संभाग)

सलाहकार

श्री जमुना प्रसाद (सहा.आयुक्त, के.वि.सं, गुवाहाटी संभाग)

श्री डी॰ पटले (सहा.आयुक्त, के.वि.सं, गुवाहाटी संभाग)

डॉ. सिहरन बोस (सहा.आयुक्त, के.वि.सं, गुवाहाटी संभाग)

संयोजक

श्री धीरेन्द्र कुमार झा

प्राचार्य (केन्द्रीय विद्यालय, वायुसेना स्थल, बोरझार)

निर्माण समिति

श्री सिद्धार्थ कुमार पाण्डेय (स्नातकोत्तर शिक्षक-हिंदी, के.वि. नारंगी)

श्री रणरंजय सिंह (स्नातकोत्तर शिक्षक-हिंदी, के.वि., के.रि.पु.बल, अमेरिगोग)

श्रीमती सुनीता देवी (स्नातकोत्तर शिक्षिका -हिंदी, के.वि., वायुसेना स्थल, बोरझार)

सत्रांत परीक्षा 2015-16

हिन्दी (आधार-अ पाठ्यक्रम)

कक्षा-बारहवीं

ब्लू प्रिंट

निर्धारित समय-3 घंटे अधिकतम अंक-100

प्रश्न-संख्या	प्रश्नों के प्रकार	अंक विभाजन	अपठित बोध	लेखन	साहित्य	विशेष टिप्पणी
1	.अति लघुत्तरात्मक	1x5=5	अपठित पद्यांश			पठन, भावबोध व लेखन संबंधी
2	अ.ल.उ. एवं ल.उ.	2x7=14 +1=15	अपठित गद्यांश			पठन, भावबोध व लेखन संबंधी
3	निबंधात्मक	5		निबंध		लेखन व अभिव्यक्ति
4	पत्र-लेखन	5		पत्र-लेखन		
5	अ.ल.उ. .	1X5 =5		जनसंचार एवं पत्रकारिता		लेखन व अभिव्यक्ति
6	निबंधात्मक	5		आलेख/पुस्तक समीक्षा		लेखन व अभिव्यक्ति
7	निबंधात्मक	5		फीचर,		लेखन व अभिव्यक्ति
8	लघु उत्तरात्मक	2x4=8			काव्य-अर्थ ग्रहण	अवबोध पठन एवं लेखन
9	लघु उत्तरात्मक	2x3=6			काव्य-सौंदर्य-बोध	अवबोध पठन एवं लेखन
10	निबंधात्मक	3+3=6			काव्य विषय-वस्तु	अवबोध पठन एवं लेखन
11	लघु उत्तरात्मक	2X4=8			गद्य -अर्थ ग्रहण	अवबोधन , भावग्रहण एवं लेखन
12	निबंधात्मक	3X4=12			गद्य- विषय-वस्तु	अवबोधन , भावग्रहण एवं लेखन
13	लघु उत्तरात्मक	5			पूरक- विषय वस्तु	मूल्य आधारित प्रश्न
14	दीर्घउत्तरात्मक	5+5=10			पूरक- विषय वस्तु	अवबोधन , भावग्रहण एवं लेखन

कुछ सामान्य सुझाव :

1- आप हिंदी विषय की तैयारी हेतु एक समय सारणी तैयार करें|
2- समय सारणी इस प्रकार होनी चाहिए कि आपका अधिकांश समय नष्ट होने के बजाए अध्ययन के लिए समर्पित हो|
3- आप अपनी सुविधानुसार हिंदी विषय के प्रत्येक अंश के लिए तार्किक ढंग से समय विभाजित करें |
4- किसी भी एक विषय को आवश्यकता से अधिक समय न दें और साथ ही किसी विषय को नज़रअंदाज न करें|
5- हिंदी विषय में आप अपने कमजोर पक्ष को रेखांकित कीजिए एवं शिक्षक से बात कीजिए|
6- अभ्यास के द्वारा आप अपने कमज़ोर पक्ष को दूर कर पाएंगे, इसलिए निरंतर अभ्यास कीजिए|
7- परीक्षा भवन में लेखन आरंभ करने से पहले मिलने वाले 15 मिनट के अतिरिक्त समय में पूरे प्रश्न-पत्र को ध्यान से पढ़े|
8- प्रश्नों को हल करते समय उन प्रश्नों को पहले हल करें जो आपके लिए आसान हो इससे समय की बचत भी होगी|
9- लिखते समय यदि आप किसी प्रश्न या समस्या पर अटक जाते हैं तो उससे आगे बढ़कर अगले प्रश्न को हल करें|
10- प्रश्नों को हल करते समय संतोषजनक उत्तर एवं शब्द-सीमा का ध्यान रखिए-
    क- यदि प्रश्न 1 अंक का हो तो उसका उतर एक या दो पंक्तियों में ही लिखिए|
    ख- यदि प्रश्न 2 अंक का हो तो उसका उतर तीन या चार पंक्तियों में लिखिए|
    ग- यदि प्रश्न 3 अंक का हो तो उसका उत्तर अधिकतम छह या आठ पंक्तियों में लिखिए |
    घ- निबंध , फीचर , आलेख या पुस्तक समीक्षा एक पृष्ठ से अधिक न लिखें|

खंड-क

सुझाव- प्रश्न संख्या एक एवं दो अपठित गद्यांश या काव्यांश पर आधारित होगा, अर्थात यह अंश आपके पाठ्यपुस्तक क हिस्सा नहीं होगा| अत: इसका उत्तर लिखते समय निम्न सुझाव आपके लिए कारगर होगा |

1- *दिए गए गद्यांश या काव्यांश को कम से दो बार पढ़कर उसके मूलभाव या अर्थ को समझने की कोशिश करनी चाहिए*
2- *दूसरी बार गद्यांश या काव्यांश पढ़ते समय प्रश्नों के उत्तर संकेत जहां प्राप्त होते हो उसे पेंसिल से अंकित कर दें|*
3- *गद्यांश या काव्यांश के पंक्तियों को ज्यों का त्यों उतारने के बजाए उसे अपने शब्दों में लिखने का प्रयास करें|*
4- *एक अंक के प्रश्न को एक या दो पंक्ति में तथा दो अंक के प्रश्न को तीन या चार पंक्ति से अधिक न लिखे|*
5- *गद्यांश या काव्यांश के मूलभाव को शीर्षक के रूप में लिखना चाहिए|*

प्रश्न संख्या-1

उदाहरण-1

इस संसार में कुछ व्यक्ति भाग्यवादी होते हैं और कुछ केवल अपने पुरुषार्थ पर भरोसा रखते हैं | प्राय: ऐसा देखा जाता है कि भाग्यवादी व्यक्ति ईश्वरीय इच्छा को सर्वोपरि मानता हैं और अपने प्रयत्नों को गौण मान बैठते हैं | वे विधाता का ही दूसरा नाम भाग्य को मान लेते है| भाग्यवादी कभी-कभी अकर्मण्यता की स्थिति में भी आ जाते हैं| उनका कथन होता है कि कुछ नहीं कर सकते सब कुछ ईश्वर के अधीन है| हमें उसी प्रकार परिणाम भुगतना पड़ेगा जैसा भगवान चाहेगा| भाग्योदय शब्द में भाग्य प्रधान है | एक अन्य शब्द है -सूर्योदय| हम जानते हैं कि उदय सूरज का नहीं होता सूरज तो अपनी जगह पर रहता है, चलती घूमती तो धरती ही है| फिर भी सूर्योदय हमें बहुत शुभ और सार्थक मालूम होता है| भाग्य भी इसी प्रकार है | हमारा मुख सही भाग्य की तरफ हो जाए तो इसे भाग्योदय ही मानना चाहिए|

पुरुषार्थी व्यक्ति अपने परिश्रम के बल पर कार्य सिद्ध कर लेना चाहता है| पुरुषार्थ वह है जो पुरुष को सप्रयास रखे| पुरुष का अर्थ पशु से भिन्न है| बल-विक्रम तो पशु में अधिक होता है, लेकिन पुरुषार्थ पशु चेष्टा के अर्थ से अधिक भिन्न और श्रेष्ठ है | वासना से पीड़ित होकर पशु में अधिक पराक्रम देखा जाता है, किन्तु यह पुरुष से ही संभव है कि वह आत्मविसर्जन में पराक्रम दिखाए|

पुरुषार्थ व्यक्ति को क्रियाशील रखता है जबकि अकर्मण्य व्यक्ति ही भाग्य के भरोसे बैठता है| हमें भाग्य और पुरुषार्थ का मेल साधना है | यदि सही दिशा में बढ़ेंगे तो सफलता अवश्य हमारे कदम चूमेगी|

प्रश्न- 1 कौन किसकी इच्छा को सर्वोपरि मानता है और क्यों? 2

उत्तर- 1 भाग्यवादी पुरुष ईश्वरीय इच्छा को सर्वोपरि मानते है | क्योंकि वह भाग्य के भरोसे रहता है और वह ऐसा मानता है कि सब कुछ ईश्वर के हाथ में है|इस तरह वह अपने प्रयत्नों को गौण मान बैठता है और काम से दूर भागने लगता है|

प्रश्न-2 पुरुषार्थ से क्या तात्पर्य है? 2

उत्तर- 2 पुरुषार्थ से तात्पर्य है अपने इच्छित वस्तु को प्राप्त करने की उत्कट लालसा और उस हेतु प्रयास करना| पुरुषार्थी व्यक्ति कभी श्रम से जी नहीं चुराता है वह कठिन परिश्रम कर अपना लक्ष्य प्राप्त कर लेता है, पुरुषार्थ व्यक्ति को क्रियाशील रखता है |

प्रश्न- 3 कौनसी चीज पुरुष को सप्रयास रखता है? 2

उत्तर- 3 पुरुषार्थ पुरुष को सप्रयास रखता है|धर्म,अर्थ काम और मोक्ष यह चार पुरुषार्थ है जिनके प्राप्ति हेतु मनुष्य कर्मरत रहता है| मनुष्य के जीवन का प्राप्य यही पुरुषार्थ है उसे जीवन में कर्मरत रखता है|

प्रश्न- 4 भाग्यवादी होना या पुरुषार्थी होना आपके विचार से क्या उचित है? 2

उत्तर- 4 छात्र इसका उत्तर स्वयं के विवेक से देंगे|

प्रश्न-5 'आत्मविसर्जन में पराक्रम' से क्या तात्पर्य है? 2

उत्तर-5 व्यक्ति के अन्दर यदि पराक्रम है और वह उसका प्रयोग बिना सोचे समझे करे तो उसका यह गुण किसी पशु से अलग नहीं होगा| लेकिन यदि वह अपने पराक्रम का प्रयोग सोच समझ कर करे तो वह सच्चा मनुष्य कहलाएगा| बल के साथ विनम्रता का होना सर्वोच्च मनुष्यता की निशानी है, यदि वह अपने से कमजोर को देखकर कर वह अपने पराक्रम को त्याग दे तो वह सच्चा बलशाली होगा|

प्रश्न-6 सफलता कैसे हमारे कदम चूमेगी? 2

उत्तर-6 यदि इंसान सही समय पर ठीक प्रकार से कर्म को महत्व देते हुए प्रयास करे तो सफलता अवश्य ही हमरे कदम चूमेगी| लेकिन यदि हम भाग्य के भरोसे बैठ गए तो हम नि:संदेह सफलता से दूर रहेंगे|

प्रश्न- 7 'सूर्योदय' का समास विग्रह करते हुए प्रयुक्त समास का नाम लिखिए| 1

उत्तर- 7 'सूर्य का उदय' तत्पुरुष समास |

प्रश्न- 8 ' अकर्मण्यता' शब्द से उपसर्ग एवं प्रत्यय अलग कीजिए| 1

उत्तर- 8 उपसर्ग 'अ' एवं प्रत्यय 'ता' |

प्रश्न- 9 उपरोक्त गद्यांश का शीर्षक लिखिए | 1

उत्तर- 9 भाग्य और पुरुषार्थ, या इस भाव से सम्बंधित कोई भी शीर्षक |

अभ्यास कार्य -2

संस्कृति तब तक गूंगी रहती है,जब तक राष्ट्र की अपनी वाणी नहीं होती|राजनीतिक पराधीनता की जंजीर जरूर कटी है,किन्तु अंग्रेजी और अंग्रेजीयत के रूप में दासता के चिह्न आज भी मौजूद है| भाषा परिधान नहीं, बल्कि किसी राष्ट्र के व्यक्तित्व की द्योतक होती है| हमारे बहुभाषी देश के सामान ही दुनिया में बहुत सी भाषाओं वाले देश है| रूस में 66 भाषाएँ बोली और लिखी जाती हैं, लेकिन वहा की

राष्ट्र भाषा रूसी है|हमारे संस्कृत के गोमुख से निकली हुई सब भारतीय भाषाएँ हमारी अपनी है| उनमे अपनी व्यापकता आरम्भ से ही जन-विद्रोह तथा जनवाणी को देते रहने के कारण ही हिंदी भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है| केवल संविधान में लिख देने मात्र से यह बात पूरी नहीं हो जाती बल्कि इसे राष्ट्र के जीवन में प्रतिष्ठित करना होगा अन्यथा इस स्वतंत्रता का क्या मूल्य है? विश्व चेतना जगाने से पहले अपने देश में राष्ट्रभाषा चेतना जगाएँ | राष्ट्र भाषा की आवश्यकता के अनेक आधार है|राष्ट्रभाषा का महत्त्व अपरिहार्य है|राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रीय गान, राष्ट्रीय पशु इत्यादि राष्ट्रीय सम्मान के जीवंत प्रतीक होते है|किसी शब्द की भावात्मक एकता भी तभी संभव है, जब सम्पूर्ण राष्ट्र में भाव तथा विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम एक भाषा हो|विदेशों में लगभग 6 करोड़ लोग हिंदी बोलते है और समझते है|मारीशस में 65% गुयाना में 65%फिजी में 15%तथा दक्षिण अफ्रीका में लगभग 32% जनता हिंदीभाषी है| सूरीनाम में लगभग 4 लाख लोग हिंदी को भली प्रकार समझने की सामर्थ्य रखते है| भारत में हिंदी बोलने वालो की संख्या सर्वाधिक है| अत: इसे राष्ट्रभाषा का गौरव प्रदान किया गया है|

प्रश्न-

1-	भारत एक बहुभाषी देश है समझाइए|	2
2-	भाषा के महत्त्व पर प्रकाश डालिए		2
3-	भारत के अलावा अन्य किन देशों में हिंदी बोली जाती है|	2
4-	प्रत्येक राष्ट्र की एक राष्ट्रभाषा क्यों होनी चाहिए|`	2
5-	भारत की राष्ट्रभाषा हिंदी है क्यों?	2
6-	राष्ट्रभाषा किस प्रकार भावात्मक एकता स्थापित कर सकती है|	2
7-	उपरोक्त गद्यांश के लिए शीर्षक दीजिए|	1
8-	ध्वज के दो समानार्थी शब्द लिखिए|	1
9-	'संविधान' शब्द से उपसर्ग और मूलशब्द को अलग कीजिए|	1

2-

संविधान सभा में डॉ अम्बेडकर ने एक बार कहा था-'संविधान सभा में क्यों आया? केवल दलितों के हित के लिए|' संविधान की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने एक बार कहा था संविधान चाहे कितना ही अच्छा हो, यदि उसको व्यवहार में लाने वाले लोग अच्छे न हो तो संविधान निश्चय ही बुरा साबित होगा| अच्छे लोगों के हाथों में बुरे संविधान के भी अच्छा साबित होने की संभावना बनी रहती है|भारत के लोग इसके साथ कैसा व्यवहार करेंगे यह कौन जान सकता है'?

डॉ अम्बेडकर ने संविधान की विभिन्न धाराओं के अंतर्गत हमारे समाज में व्याप्त सभी बुराइयों एवं कुरीतियों का अंत कर दिया| जाती पांति के कारण अछूत या दलित लोगों को दुकानों,धर्मशालाओं कुओं

और सार्वजनिक नलों का उपयोग करने की मनाही थी| डॉ अम्बेडकर नए भी संविधान के अनुच्छेद 15 में किसी प्रकार के भेद भाव को समाप्त करने की बात कही है|

इस प्रकार संविधान के अनुच्छेद 19 के अंतर्गत डॉ अम्बेडकर ने भारत के सभी नागरिकों को अपने विचार व्यक्त करने की स्वतंत्रता दी, जबकि इससे पूर्व मजदूरों को जमींदारों के सामने, नौकर को अपने मालिक के समकक्ष तथा स्त्रियों का पुरूषों के सामने बोलना भी अपराध माना जाता था| संविधान के अनुच्छेद 335 के अंतर्गत अनूसूचित जाति व जनजाति के लोगों के लिए सरकारी सेवाओं और पदों में आरक्षण की व्यवस्था करके सदियों से दलित एवं शोषित वर्ग का सबसे बड़ा हित किया गया| जब तक भारत में लोकतंत्र रहेगा और संविधान का पालन होता रहेगा, तब तक डॉ अम्बेडकर का नाम संविधान निर्माता के रूप में जाना जाता रहेगा|

प्रश्न-

1-डॉ अम्बेडकर के संविधान सभा में आने के मुख्य उद्देश्य पर प्रकाश डालिए|	2
2- संविधान के सन्दर्भ में डॉ अम्बेडकर के क्या विचार थे?	2
3- संविधान के अनुच्छेद 335 में क्या प्रावधान है?	2
4- संविधान के अनुच्छेद 19 में क्या व्यवस्था की गयी है?	2
5- अनुच्छेद 15 किस प्रकार से दलितोत्थान में सहायक सिद्ध हुआ है?	2
6-लोकतंत्र की स्थापना में संविधान का विशेष महत्त्व है. सिद्ध कीजिए|	2
7- कुरीतियों शब्द से उपसर्ग और प्रत्यय को अलग कीजिए|	1
8- धर्मशाला पद का समास विग्रह कीजिए		1
9-उपरोक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए|	1

3-

अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए हमें उन वस्तुओं को छोड़ना पड़ता है,जो हमें प्रिय तो हैं लेकिन सफलता की राह में रूकावट है| इनमें से कुछ है, आलस्य, लोभ, मोह इत्यादि| सफलता के लिए व्यक्ति के मन में परिश्रम और दृढ निश्चय की आवश्यकता होती है| मनुष्य मन की निर्बलता उसे सफलता से दूर ले जाती है, जिसे प्रेरणा द्वारा समाप्त किया जाना चाहिए| राजकुमार सिद्धार्थ के गौतम बुद्ध बनने से पहले की बात है- सिद्धार्थ गृह त्याग कर ज्ञान प्राप्ति के लिए चले गए थे| कई वर्षों तक भटकने के बाद भी उन्हें ज्ञान की प्राप्ति नहीं हुई| आखिरकार उनकी हिम्मत टूटने लगी | उनके मन में बार बार विचार उठने लगा कि क्यों न राजमहल वापस चला जाए|

अंत में अपने मन से हार कर वह कपिलवस्तु की और लौटने लगे | चलते चलते राह में उन्हें प्यास लगी| सामने ही एक झील थी| जब वह जल पी रहे थे तब उन्होंने एक गिलहरी को देखा| वह बार-बार पानी के पास जाती, उसमे अपनी पूंछ डूबोती और बाहर निकल कर उसे रेत पर झटक देती| सिद्धार्थ

से न रहा गया| उन्होंने पूछा- नन्ही गिलहरी यह क्या कर रही हो? गिलहरी ने उत्तर दिया -इस झील नए मेरे परिवार को डुबोकर मार दिया है इसलिए मै झील को सुखा रही हूँ| सिद्धार्थ बोले यह काम तो तुमसे कभी नहीं हो पाएगा| झील को सुखाना तुम्हारे बस की बात नहीं है| गिलहरी निश्चयात्मक स्वर में बोली -आप चाहे ऐसा मानते हो लेकिन मै ऐसा नहीं मानती| मै तो बस इतना जानती हूँ कि मन ने जिस कार्य को करने का निश्चय किया उस पर अटल रहने से वह वह हो ही जाता है| मै तो अपना काम करती रहूंगी| गिलहरी की यह बात सिद्धार्थ के मन में बस गई | उन्हें अपने मन की दुर्बलता का एहसास हो गया| वे वापस लौटे और ताप में संलग्न हो गए|

प्रश्न-

1- सफल व्यक्ति बनाने के लिए मनुष्य में किन गुणों का होना आवश्यक है?	2
2- राजकुमार सिद्धार्थ ने गिलहरी को क्या करते देखा?	2
3- राजकुमार सिद्धार्थ ने कपिलवस्तु लौटने का निर्णय क्यों किया?	2
4- गिलहरी झील क्यों सुखाना चाहती थी?	2
5- गिलहरी की कौन सी बात सिद्धार्थ के मन में बस गयी?	2
6- लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए किन वस्तुओं को छोड़ना पड़ता है?	1
7- 'जब वे जल पी रहे थे तब उन्होंने एक गिलहरी को देखा' सरल वाक्य में बदलिए|	1
8- राजमहल कौन सा समास है?	1
9- 'निर्बलता' का विपरीतार्थक शब्द लिखिए|	1
10-उपरोक्त गद्यांश के लिए शीर्षक लिखिए|	1

4-

सुबह के शांत वातावरण में अक्सर पार्कों से हंसी की ऊँची आवाजें सुनाई पड़ती है|पहले लगता था कि कुछ पुराने मित्र मिलकर हंसी मजाक कर रहे है, पर कौतुहलवश ध्यान से देखने पर जाना कि वे सब एक साथ एक ही तरह से ऐसे हंस रहे हो जैसे कोई क्लास चल रही हो| पूछने पर पता चला कि वे सब हास्य क्लब के सदस्य हैं| यह क्या? अब हंसने के लिए क्लब का सहारा लेना पड़ता है? दरअसल आज के तनावपूर्ण जीवन में आजकल लोग हंसना भूल गए है| अतिशय दबावों के कारण स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं बढती जा रही हैं| छोटे बच्चे हो या बुजुर्ग दबाव के कारण वे आत्महत्या करने लगे हैं| इस स्थिति में चिंतित डॉक्टरों, मनोविश्लेषकों के नुस्खे में हंसी को दवा के तौर पर सुझाना शुरू किया दिया है|नतीजा यह है कि अब सजग लोग इसे अपनाने की होड़ में लगे हैं | रेडियों,टीवी, पत्र,पत्रिकाएँ और फिल्में भी इस दिशा में मदद कर रही हैं| हंसी की जरूरत सुर्ख़ियों में होने कारण अब उस पर किताबें लिखी जा रही हैं, वर्कशॉप हो रहे हैं| अब यह प्रमाणित हो गया है कि खुशमिजाज लोग जीवन में अधिक सफल होते हैं, वे ज्यादा कमाते है,उनके मित्रों की संख्या ज्यादा होती है, उनकी शादी ज्यादा निभती है,

वे स्वस्थ रहते है और स्वभाविक है कि अधिक लम्बी उम्र जीते है| अत: जो सब पाने के लिए इंसान भागदौड़ करता है , हंसी उस दिशा में दवा का काम करती है|

प्रश्न-

1- हंसी का जीवन में क्या महत्त्व है? 2
2- लोग हंसना क्यों भूल गए हैं? 2
3- हंसी की जरूरत क्यों महसूस की जा रही है? 2
4- हंसी दवा के रूप में किस प्रकार काम करती है? 2
5- लम्बी आयु के लिए मनुष्य को क्या करना चाहिए? 2
6- खुशमिजाज लोग जीवन में अधिक सफल क्यों होते हैं? 2
7- हमारे तनाव का मुख्य कारण क्या है? 1
8- तनावपूर्ण का समास विग्रह कर समास का नाम लिखिए| 1
9- उपरोक्त गद्यांश का शीर्षक दीजिए| 1

4

यद्यपि यह शाश्वत सत्य है, फिर भी मृत्यु से सबको भय लगता है| वास्तव में भय किसी वस्तु से अलग हो जाने का है|जो छूटता है उसमे भय है| धन छूट जाने का भय, परिवार छूट जाने का भय | त्याग में भय है| किस त्याग में भय है ? जिन वस्तुओं को परिवारजनों को हम उपयोगी समझते है, उनके त्याग में भय है| वहां भय नहीं होता जहां त्याग अपनी इच्छा से किया जाए| जैसे कपड़ा पुराना हो जाए तो हम उसे अपनी इच्छा से त्याग देते है| ऐसे त्याग में संतोष है| दु:ख: वहां होता है जहां कोई वस्तु छिन या छूट जाती है|हम धन या कपड़ा दूसरों को दे सकते है, परन्तु एक वस्तु है 'प्राण' जो हम नहीं दे सकते हैं शरीर से प्राण निकल जाए तो हम कहते हैं मृत्यु हो गयी| इसमें दु:ख होता है क्योंकि प्राण को इच्छा से नहीं छोड़ते| पंचभूतों से बना यह शरीर पहले विकास को प्राप्त होता है और फिर ह्रास की ओर उन्मुख होता है| पंच महाभूतों के साथ आत्मा का जुड़ जाना जन्म है| पंच महाभूतों से आत्मा का अलग हो जाना मृत्यु है|

हमारे मनीषी बताते हैं कि जो लोग मृत्यु से निर्भय होकर जीवन को पूर्णता के साथ और अर्थपूर्ण जीते हैं, वे ही अपना जीवन आत्मविश्वास से जी पाते हैं| परन्तु हममें से अधिकतर जीवन के परिवर्तन और उलटफेर में इतने तटस्थ और उदासीन रहते हैं कि मृत्यु के बारे में अज्ञानी से बने रहते हैं | मृत्यु अपने शिकार पर बाज पक्षी की तरह अचानक आक्रमण कर देती है| गुरु तेगबहादुर चेतावनी देते हैं; प्रिय मित्र मृत्यु स्वच्छंद है, वह कभी भी अपने शिकार के भक्षण को झपट सकती है| वह चुपचाप ही आक्रमण कर देती है,अत: आनंद और प्रेम के साथ जीओ|

प्रश्न-

1- भय का कारण लेखक क्या मानता है? 2
2- इच्छा किस प्रकार भय उत्पन्न कराती है? 2
3- जन्म तथा मृत्यु को गद्यांश में किस प्रका परिभाषित किया गया है? 2
4- जीवन में निर्भय होना क्यों जरूरी है? 2
5- गुरु तेगबहादुर जी की चेतावनी का क्या अभिप्राय है? 2

6- कैसे त्याग में संतोष होता है? 1

7- लेखक दुःख की स्थिति कब मानता है? 1

8- जीवन कब अर्थपूर्ण तथा पूर्णतया माना जाता है? 1

9- 'जन्म' का विलोम शब्द लिखिए| 1

10- उपरोक्त गद्यांश का शीर्षक लिखिए| 1

प्रश्न संख्या-2

उदाहरण- 1

क्या तुमने कभी सुनी है
सपनों में चमकती कुल्हाड़ियों के भय से
पेड़ों की चीत्कार?
कुल्हाड़ियों के वार सहते
किसी पेड़ की हिलती टहनियों में
दिखाई पड़े हैं तुम्हें
मदद के लिए पुकारते हजारों- हज़ारों हाथ?
क्या, होती है तुम्हारे भीतर धमस
कटकर गिरता है जब कोई पेड़ धरती पर ?

प्रश्न- 1 कौन कुल्हाड़ियों का वार सहता है? **1x 5=5**

उत्तर- 1 पेड़ कुल्हाड़ियों की वार सहता है |

प्रश्न-2 कवि क्या सुनने की बात कहता है?

उत्तर-2 सपनों में पेड़ की चीत्कार |

प्रश्न-3 उपरोक्त पंक्तियों में किसकी व्यथा दिखाई गयी है?

उत्तर- पेड़ों-पौधों के कटने से उनकी व्यथा|

प्रश्न- 4 कवि किससे सवाल पूछता है?

उत्तर-4 कवि सभ्य समाज से सवाल पूछता है|

प्रश्न-5 हमें पेड़ों के प्रति कैसा रवैया अपनाना चाहिए?

उत्तर-5 हमें पेड़ों के प्रति संवेदनशील रवैया अपनाना चाहिए एवं उन्हें काटने से रोकना चाहिए|

अभ्यास हेतु प्रश्न - 1

मन समर्पित,तन समर्पित
और यह जीवन समर्पित
चाहता हूँ,देश की धरती तुझे कुछ और दूं|
माँ तुम्हारा ऋण बहुत है,मै अकिंचन,
किन्तु इतना कर रहा फिर भी निवेदन|
थाल में लाऊं सजाकर भाल जब भी,
कर दया स्वीकार लेना वह समर्पण |
गान अर्पित,प्राण अर्पित,
रक्त का कण-कण समर्पित |
चाहता हूँ, देश की धरती तुझे कुछ और दूं|
कर रहा आराधना मै आज तेरी,
एक विनती तो करो स्वीकार मेरी|
भाल पर मॉल डॉ चरण की धुल थोड़ी,
शीश पर आशीष की छाया घनेरी|
स्वप्न अर्पित, प्रश्न अर्पित
आयु का क्षण-क्षण समर्पित
चाहता हूँ, देश की धरती,तुझे कुछ और भी दूँ|
तोड़ता हूँ मोह का बंधन,क्षमा दो|
गाँव मेरे द्वार,घर,आँगन क्षमा दो|
देश का जयगान अधरों पर सजा है
देश का ध्वज हाथ में केवल थमा डॉ|
ये सुमन लो ये चमन लो,
नीड़ का तृण -तृण समर्पित|
चाहता हूँ देश की धरती तुझे कुछ और दूँ|

1- कवि देश की धरती को क्या-क्या समर्पित करना चाहता है? 1x5=5

2- मातृभूमि का हम पर क्या ऋण है?

3- कवि देश की आराधना में क्या निवेदन करता है तथा क्यों?

4- देश के प्रति आयु का क्षण-क्षण समर्पित करने के बाद भी कवि की संतुष्टि क्यों नहीं है?

5- कवि किस-किस से क्षमा मांगता है?

एक फ़ाइल ने दूसरी फ़ाइल से कहा
बहन लगता है
साहब हमें छोड़कर जा रहे है
इसीलिए तो सारा काम जल्दी-जल्दी निपटा रहे है|
मै बार-बार सामने जाती हूँ
रोती हूँ,गिड़गिड़ाती हूँ
करती हूँ विनती हर बार
साहब जी ! इधर भी देख लो एक बार|
पर साहब है कि .....
कभी मुझे नीचे पटक देते हैं |
कभी पीछे सरका देते है
और कभी-कभी तो
फाइलों के ढेर तले
दबा देते हैं |
अधिकारी बार-बार
अंदर झाँक जाता है
डरते डरते पूछ जाता है
साहब कहाँ गए.....?
हस्ताक्षर हो गए.....?
दूसरी फ़ाइल नें
उसे प्यार से समझाया
जीवन का नया फलसफा सिखाया
बहन! हम यूं ही रोते हैं
बेकार गिड़गिड़ाते हैं
लोग आते है जाते है
हस्ताक्षर कहाँ रूकते है
हो ही जाते हैं|
पर कुछ बातें ऐसी होती हैं
जो दिखाई नहीं देती
और कुछ आवाजें
सुनाई नहीं देती

जैसे फूल खिलते है
और अपनी महक छोड़ जाते हैं
वैसे ही कुछ लोग
कागज़ पर नहीं
दिलों पर हस्ताक्षर छोड़ जाते है|

1- साहब जल्दी-जल्दी काम क्यों निपटा रहे है? 1x5=5
2- फ़ाइल की विनती पर साहब की क्या प्रतिक्रया होती है?
3- दूसरी फ़ाइल ने पहली फ़ाइल को क्या समझाया?
4- फूलों की क्या विशेषता उपरोक्त पंक्तियों में बताई गयी है?
5- इस काव्यांश का भाव स्पष्ट करें |

4
तुम नहीं चाहते थे क्या -
फूल खिलें
भौरें गूंजे
तितलियाँ उड़ें?
नहीं चाहते थे तुम -
शरादाकाश
वसंत की हवा
मंजरियों का महोत्सव?
कोकिल की कुहू, हिरनों की दौड़?
तुम्हें तो पसंद थे भेड़िएँ
भेड़िएँ से धीरे धीरे जन्गालाते आदमी
समूची हरियाली कू धुंआ बनाते विस्फोट!
तुमने ही बना दिया है सबको अंधा बहरा
आकाशगामी हो गए सब
कोलाहल में डूबे, वाणी विहीन!
अब भी समय हैखड़े हो जाओ अंधेरों के खिलाफ
वेड मन्त्रों के ध्याता,
पहचानो अपनी धरती
अपना आकाश!

1- कवि किसकी तरफ संकेत कर रहा है? 1x5=5

2- आतंक के रास्ते पर चलने वाले लोगों को कौन-कौन से रूप नहीं सुहाते?

3- आशय स्पष्ट कीजिए-

तुम्हे पसंद थे भेड़िए|

भेड़ियों से धीरे-धीरे जंगलाते आदमी|

4- 'अब भी समय है' कहकर कवि क्या अपेक्षा करता है?

5- वसंत ऋतु के सौन्दर्य का अपने शब्दों में वर्णन कीजिए|

5

जन्म दिया माता सा जिसने , किया सदा लालन-पालन
जिसके मिट्टी जल से ही है रचा गया हम सब का तन |
गिरिवर नित रक्षा करते है,उच्च उठा के श्रंग-महान,
जिसके लता द्रुमादिक करते हम सबको अपनी छाया दान|
माता केवल बाल काल में निज अंक में धरती है,
हम अशक्त जब तलक तभी तक पालन पोषण कराती है|
मातृभूमि करती है सबका लालन सदा मृत्यु पर्यन्त,
जिसके दया प्रवाहो का होता न कभी सपने में अंत
मर जाने पर कण देहों के, इसमे ही मिल जाते हैं,
हिन्दू जलाते,यवन ईसाई शरण इसी में पाते हैं|
ऐसी मातृभूमि मेरी है, स्वर्णलोक से भी प्यारी,
उसके चरण-कमल पर मेरा, तन मन धन सब बलिहारी|

1- गिरिवर लता आदि का हमारे जीवन में क्या महत्त्व है? 1x 5=5

2- माता की अपेक्षा मातृभूमि का हमारे पालन-पोषण में अधिक महत्त्व क्यों है?

3- मृत्यु के उपरांत मातृभूमि का मानव के लिए क्या महत्त्व है?

4- कवि कसके ऊपर अपना सब कुछ बलिहारी करने की बात कर रहा है?

5- पद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए|

खंड-ख

प्रश्न संख्या -3

निबंध लेखन

सुझाव: प्रश्न संख्या 3 निबंध लेखन होगा / निबंध लिखते समय निम्न सुझाव आपके लिए कारगर होगा -

1. ***दिए गए विकल्प में जिस विषय की आपको समुचित जानकारी हो उसे ही चुने /***
2. ***आप निबंध के हिस्से को तीन भाग में विभाजित कर लें| 1- विषय का परिचय 2- विषय का विस्तार 3- निष्कर्ष***
3. ***विषय वस्तु को रोचक बनाने के लिए आवश्यकतानुसार महापुरुषों , लेखकों के कथनों या सामान्य जीवन के अनुभवों को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत कर सकते है|***
4. ***शब्द सीमा का ध्यान रखें एवं अनावश्यक बातें लिखने से बचें|***

उदाहरण-

<u>जीवन में अनुशासन का महत्त्व</u>

अनुशासन का अर्थ है 'शासन के पीछे चलना'| अर्थात सामाजिक,राजनीतिक तथा धार्मिक सभी प्रकार के आदेशों और नियमों का पालन करना| अनुशासन का पालन पालन करना उन सब व्यक्तियों के लिए अनिवार्य होता है जिनके लिए वे बनाएं गए हैं|

व्यवहारिक जीवन में अनुशासन का होना नितांत आवश्यक है| यदि हम घर में घर के नियमों का उल्लंघन करेंगे , बाज़ार में बाज़ार के नियमों का उल्लंघन करेंगे,स्कूल में स्कूल के नियमों का उल्लंघन करेंगे तो सभी हमारे व्यवहार से असंतुष्ट हो जाएंगे हमें अशिष्ट समझ लिया जाएगा| किसी भी समाज की व्यवस्था तभी ठीक रह सकती है जब उस समाज के सभी सदस्य अनुशासित तथा नियमित हों| यदि समाज में अनुशासनहीनता आ जाए तो सारा समाज दूषित हो जाता है|

जिस देश में अनुशासन नहीं, वहां शासक और शासित दोनों परेशान रहते हैं| राष्ट्र का वातावरण अशांत रहता है और विकास के मार्ग में बाधा उत्पन्न हो जाती है अनुशासनहीनता की स्थिति में सैन्य शक्ति दुर्बल हो जाती है| अनुशासन सेना का प्राण है | बिना अनुशासन के एकता , संगठन चुस्ती और शक्ति सब कुछ छिन्न भिन्न हो जाते हैं| जिस देश की सेना में अनुशासन की कमी हो वह देश पतन के गर्त में गिरता है|

अनुशासन जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आवश्यक हैं| प्रश्न यह उठता है कि अनुशासन की भावना जगाई कैसे जाए| अनुशासन सख्ती से उत्पन्न करने की वस्तु नहीं है| यह वातावरण और अभ्यास पर निर्भर करती है| जन्म लेते ही बच्चे को ऐसा वातावरण मिले जिसमे सब कार्य नियमित और अनुशासित हों, जहां सब लोग अनुशासन का पालन करते हों तो उस बच्चे की आयु बढ़ने के साथ-साथ उसे अनुशासन का महत्त्व हो जाता है||

अभ्यास कार्य-

1. वृक्ष लगाओं जीवन बचाओं
2. बदलते जीवन मूल्य
3. नई सदी: नया समाज
4. कामकाजी महिलाओं की समस्याएँ/ देश की प्रगति में महिलाओं का योगदान
5. राष्ट्र-निर्माण में युवा पीढ़ी का योगदान
6. इंटरनेट : सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव
7. महानगरीय जीवन की चुनौतियां
8. लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका

प्रश्न संख्या-4

पत्र-लेखन

सुझाव: प्रश्न संख्या 4 पत्र लेखन होगा | पत्र लिखते समय निम्न सुझाव आपके लिए कारगर होगा -

1- पत्र का आरम्भ बायीं ओर से करें एवं पत्र लेखन के प्रारूप का विशेष ध्यान रखें|

2- सर्वप्रथम ' सेवा में' लिखते हैं उसके बाद पत्र प्राप्त करने वाले का नाम,(पदनाम) विभाग का नाम एवं पता लिखते है|

3- तत्पश्चात दिनांक लिखते हैं | तदुपरांत पत्र के विषय को लिखते हैं|

4- सम्बोधन के रूप मान्यवर या महोदय लिखते हुए पत्र का आरम्भ करते हैं |

अंत में भवदीय लिखने के बाद प्रेषक का नाम लिखते हैं|

यथा-

सेवा में,

.....(अधिकारी का पदनाम)

.....(कार्यालय का नाम)

.....(पता)

..... (दिनांक)

विषय: .....

महोदय,

.....

.....

.....

..... |

भवदीय

.....(प्रेषक का नाम)

.....(पता)

<u>पत्र का प्रारूप</u>

शिकायती पत्र

(आपके क्षेत्र में स्थित एक औद्योगिक संस्थान का गंदा पानी आपके नगर कि नदी को दूषित कर रहा है | प्रदूषण नियंत्रण विभाग के मुख्य अधिकारी को पत्र द्वारा इस समस्या से अवगत कराइए |)

सेवा में,
मुख्य अधिकारी
प्रदूषण-नियंत्रण विभाग,
वाराणसी, उत्तर-प्रदेश |

दिनांक: 26.11.2013

विषय- औद्योगिक संस्थान के गंदे पानी द्वारा फैल रहे प्रदूषण को नियंत्रित करने के संदर्भ में|

महोदय,

मै नीरज कुमार रामनगर कालोनी, वाराणसी का रहने वाला हूँ |मै इस पत्र के माध्यम से आपका ध्यान औद्योगिक संस्थान के गंदे पानी द्वारा फैल रहे प्रदूषण विशेषकर दूषित हो रही पवित्र नदी गंगा कि तरफ आकर्षित कराना चाहता हूँ| विदित हो की इस शहर में अनेक उद्गयोग धंधे है| वस्त्र-निर्माण एवं रसायनों से संबंधित कारखानों सेनिकलने वाला दूषित जल सीधे गंगा नदी में जाता है| यह जल इतना दूषित है कि इसे पशु तक भी पीना पसंद नहीं करते, यही नहीं बल्कि इसके प्रभाव से नदी कि मछलियाँ भी मरने लगी है| विदित हो कि गंगा नदी लोगों की भावनाओं से जुड़ी है| स्थानीय अधिकारियों से इस बारे में अनेक बार शिकायत भी की जा चुकी है पर कोई कार्यवाही नहीं हुई|

महोदय आपसे विनम्र निवेदन है कि ऐसे उद्योग संस्थानों को प्रदूषण संबंधी नोटिस भेजा जाए और आवश्यक हो तो कठोर कार्यवाही भी कि जाए जिससे प्रदूषण कि समस्या से निजात मिल सकें| आशा है कि आप इस समस्या कि गंभीरता को समझेंगे तथा आवश्यक कदम उठाएंगे|

धन्यवाद सहित|

भवदीय
नीरज कुमार
रामनगर कालोनी, वाराणसी|

<u>अभ्यास कार्य-</u>

1-अनियमित डाक-वितरण की शिकायत करते हुए पोस्टमास्टर को पत्र लिखिए।

2-अपने क्षेत्र में बिजली-संकट से उत्पन्न कठिनाइयों का वर्णन करते हुए अधिशासी अभियन्ता विद्युत-बोर्ड को पत्र लिखिए।

3-हड़ताल के कारण जनजीवन पर पड़ने वाले प्रभाव पर विचार व्यक्त करते हुए किसी समाचार पत्र के सम्पादक को पत्र लिखिए|

4-सड़कों की दुर्दशा पर खेद प्रकट करते हुए नगरपालिका के मुख्य अधिकारी को पत्र लिखिए |

5- किसी सामाचार पत्र के सम्पादक को एक पत्र लिखिए जिसमे चुनाव प्रचार को नियंत्रित करने का सुझाव दिया गया हो

<u>प्रश्न संख्या-5</u>

जनसंचार

सुझाव: प्रश्न संख्या 5 जनसंचार पर आधारित अतिलघुउत्तरीय प्रश्न होगा | इस प्रश्न का उत्तर लिखते समय निम्न सुझाव आपके लिए कारगर होगा -

1- पूछे गए प्रश्नों का उत्तर एक या दो पंक्ति में लिखें|

2- यह अंश हमारे दैनिक जीवन से संबंधित से संबंधित है जिसे हम निरंतर देखते रहते है, लिखते समय समस्या आने पर तथ्यों को स्मरण करने का प्रयास करें पुन: लिखें |

प्रश्न-1 संचार किसे कहते है?

उत्तर- लिखित , मौखिक और सांकेतिक रूप से सूचना को एक जगह से दूसरे जगह तक पहुचाना संचार कहलाता है|

प्रश्न-2 जनसंचार किसे कहते है?

उत्तर- सूचना को किसी यंत्र की सहायता से एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचाना जनसंचार कहलाता है|

प्रश्न-3 जनसंचार के महत्वपूर्ण कार्य क्या है?

उत्तर- जनसंचार के महत्वपूर्ण कार्य निम्नलिखित है-

1- सूचना देना
2- शिक्षित करना
3- मनोरंजन करना
4- निगरानी करना
5- एजेंडा तैयार करना
6- विचार-विमर्श करना

प्रश्न-4 जनसंचार को कितने माध्यम में विभाजित किया गया है?

उत्तर- जनसंचार के दो महत्वपूर्ण माध्यम है-

1- प्रिंट(मुद्रण) माध्यम (समाचार पत्र, पत्रिकाएँ)

2- इलेक्ट्रानिक माध्यम (रेडियों, टेलीविजन, इंटरनेट, फैक्स, सिनेमा, मोबाइल ,)

प्रश्न-5 मुद्रित माध्यम के दो गुण एवं दो कमियाँ बताइए?

उत्तर- गुण 1- समाचार को सहेजकर रख सकते है, 2- समाचार को बार-बार पढ़ सकते है|

कमी- 1- एक साथ एक ही आदमी उसको पढ़ सकता है, 2- निरक्षर आदमी समाचार नहीं पा सकता है|

प्रश्न-6 इलेक्ट्रानिक माध्यम के दो गुण एवं दो कमियाँ बताइए?

उत्तर- गुण-1- एक साथ अधिक से अधिक लोग समाचार ग्रहण कर सकते है|2- निरक्षर भी समाचार पा सकते है|

कमी-1- इसे सहेजकर नहीं रख सकते है|2- बार-बार समाचार नहीं सुन सकते |

प्रश्न-7 समाचार की (पत्रकारिता की) भाषा शैली कैसी होनो चाहिए?

उत्तर- भाषा अत्यंत सरल होनी चाहिए| वाक्य छोटे,सीधे,सरल एवं स्पष्ट होने चाहिए|अप्रचलित भाषा , भ्रामक भाषा, आदि के प्रयोग से बचना चाहिए|

प्रश्न-8 उल्टा पिरामिड शैली क्या है?

उत्तर- उलटा पिरामिड शैली समाचार लिखने की एक शैली है| इसके अंतर्गत समाचार के महत्वपूर्ण भाग को सबसे पहले लिखते है तथा बाद में कम महत्त्व की बातें लिखी जाती है|

प्रश्न-9 पत्रकार कितने प्रकार के होते है |

उत्तर- पत्रकार तीन प्रकार के होते है-

1- अंशकालिक पत्रकार

2- पूर्णकालिक पत्रकार

3- स्वतंत्र पत्रकार (फ्रीलांसर पत्रकार)

प्रश्न- 10 अंशकालिक पत्रकार किसे कहते है-

उत्तर- जो पत्रकार किसी समाचार संगठन में कुछ समय के लिए काम करता है वह अंशकालिक पत्रकार कहलाता है|

प्रश्न-11 पूर्णकालिक पत्रकार किसे कहते है?

उत्तर- जो पत्रकार किसी समाचार संगठन स्थायी रूप से काम करता है वह पूर्णकालिक पत्रकार कहलाता है|

प्रश्न-12 स्वतंत्र पत्रकार (फ्रीलांसर पत्रकार) किसे कहते है?

उत्तर- जो पत्रकार स्वतंत्र रूप से पत्रकारिता करता है अर्थात वह किसी समाचार संगठन के लिए कार्य नहीं करता है वह (फ्रीलांसर पत्रकार)स्वतंत्र पत्रकार कहलाता है|

प्रश्न-13 समाचार लेखन के कितने ककार होते है|

उत्तर- समाचार लेखन के छः ककार होते है- क्या ,कौन ,कब , कहाँ ,कैसे, क्यों|

प्रश्न-14 समाचार में 'क्लाईमेक्स' क्या होता है?

उत्तर- समाचार के अंतर्गत किसी घटना का नवीनतम एवं महत्वपूर्ण पक्ष 'क्लाईमेक्स' कहलाता है|

प्रश्न-15 फ्लैश या ब्रेकिंग न्यूज से क्या आशय है?

उत्तर- जब कोई विशेष समाचार सबसे पहले दर्शकों तक पहुंचाया जाता है तो उसे फ्लैश या ब्रेकिंग न्यूज कहते है|

प्रश्न- 16 ड्राई एंकर क्या होता है ?

उत्तर- ड्राई एंकर वह होता है जो समाचार के दृश्य नज़र नहीं आने तक दर्शकों को रिपोर्टर से मिली जानकारी के आधार पर समाचार से संबंधित सूचना देता है|

प्रश्न-17 फोन-इन से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर- एंकर का घटना स्थल से उपस्थित रिपोर्टर से फोन के माध्यम से घटित घटनाओं की जानकारी दर्शकों तक पहुंचाना फोन-इन कहलाता है|

प्रश्न-15 'लाइव' से क्या तात्पर्य है|

उत्तर- किसी समाचार का घटनास्थल से दूरदर्शन पर सीधा प्रसारण 'लाइव' कहलाता है|

प्रश्न-16 इंटरनेट क्या है?

उत्तर- इंटरनेट एक अंतर क्रियात्मक माध्यम है जिसमे प्रिंट मीडिया,रेडियों ,टेलीविजन, पुस्तक, सिनेमा एवं पुस्तकालय के सभी गुण विद्यमान है| इसके द्वारा विश्वव्यापी जाल से कोई भी सामग्री खोजी जा सकती है|

प्रश्न- 17 भारत में इंटरनेट का आरम्भ कब हुआ था?

उत्तर- भारत में इंटरनेट का आरम्भ सं 1993 में था|

प्रश्न- 18 भारत में वेबसाइट पर पत्रकारिता शुरू करने का श्रेय किसे जाता है?

उत्तर- 'तहलका डॉट काम' को |

प्रश्न-20 विचारपरक लेखन में क्या-क्या आता है?

उत्तर- विचारपरक लेखन के अंतर्गत लेख, टिप्पणियाँ, सम्पादकीय तथा स्तंभ लेखन, आदि आता है|

प्रश्न-21 फीचर किसे कहते है?

उत्तर- किसी सुव्यवस्थित , सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन को फीचर कहते है जिसके अंतर्गत सूचनाओं के साथ-साथ मनोरंजन पर भी ध्यान दिया जाता है|

प्रश्न-22 'संपादकीय' किसे कहते है?

उत्तर- वह लेख जिसमें किसी मुद्दे के प्रति समाचार पत्र की अपनी राय प्रकट होती है, सम्पादकीय कहलाता है|

प्रश्न-23 पत्रकारिता का मूल तत्व क्या है?

उत्तर- 'लोगों की जिज्ञासा' ही पत्रकारिता का मूल तत्व है|

प्रश्न-24 'बीट' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर- 'बीट' का अर्थ है समाचार का क्षेत्र विशेष | जैसे- खेल ,विज्ञान, कृषि, मनोरंजन, फिल्म, राजनीति, अर्थव्यवस्था |

प्रश्न-25 समाचार लेखन के लिए सूचनाएं प्राप्त करने का स्रोत कौन-कौन से है?

उत्तर- प्रेस-कान्फ्रेंस, प्रेस-विज्ञप्ति , साक्षात्कार, सर्वे , जाँच आदि|

प्रश्न-26 पर्यावरण से संबंधित पत्रिकाएँ कौन कौन सी है?

उत्तर- पर्यावरण एबस्ट्रेक्ट , डाउन टू अर्थ, नेशनल ज्याग्रफी आदि|

प्रश्न-27 भारत में पहला छापाखाना कहाँ और कब खुला?

उत्तर- भारत में पहला छापाखाना गोवा में सन 1556 में खुला|

प्रश्न- 28वर्तमान छापेखाने के आविष्कार का श्रेय किसको है?

उत्तर- जर्मनी के गुटेनबर्ग को|

प्रश्न- 29 मुद्रण का आरंभ कहाँ माना जाता है?

उत्तर- मुद्रण का आरम्भ चीन में हुआ |

प्रश्न-30 डेडलाइन क्या होती है?

उत्तर- समाचार को प्रकाशित या प्रसारित होने के लिए प्रेस या स्टूडियों में पहुँचने की आखिरी समय सीमा डेडलाइन कहलाती है|

प्रश्न- 31 न्यूजपेग क्या होता है?

उत्तर- जिस विषय पर लिखा जा रहा हो और उसी विषय से संबंधित कोई नई ताजा खबर जिसके कारण वह विषय चर्चा में आ गया हो न्यूजपेग कहलाता है| जैसे IPL पर लिखा जा रहा हो और स्पॉट फिक्सिंग की खबर आ जाए तो वह न्यूजपेग कहलाता है|

प्रश्न-32 पीत पत्रकारिता क्या है?

उत्तर- पीत पत्रकारिता के अंतर्गत पाठकों को लुभाने और सनसनी फैलाने के लिए झूठी अफवाहों , व्यक्तिगत आरोप-प्रत्यारोप , भंडाफोड़ से संबंधित सूचनाओं को प्रकाशित किया जाता है|

प्रश्न-33 पेज थ्री पत्रकारिता से क्या आशय है?

उत्तर- पेज थ्री पत्रकारिता से आशय ऐसी पत्रकारिता से है जिसमें फ़ैशन, अमीरों की पार्टियों , नामचीन हस्तियों के निजी जीवन एवं गतिविधियों से संबंधित समाचार प्रकाशित होते है|

प्रश्न- 34 एडवोकेसी पत्रकारिता क्या है?

उत्तर- एडवोकेसी पत्रकारिता से तात्पर्य ऐसी पत्रकारिता से है जो किसी ख़ास विचारधारा, या उद्देश्य को लेकर एक जनमत बनाने का कार्य करता है|

प्रश्न- 35 'वॉचडॉग' पत्रकारिता क्या है?

उत्तर- वह पत्रकारिता जो सरकार के कामकाज पर निगाह रखती है तथा कमियों और घोटालों का पर्दाफ़ाश करती है वॉचडॉग पत्रकारिता कहलाती है|

प्रश्न-36 समाचार के कोई चार तत्व बताइए|

उत्तर- 1- नवीनता , 2- निकटता, 3- प्रभाव, 4- जनरूचि |

प्रश्न-37 'ऑप-एड' क्या होता है?

उत्तर- सम्पादकीय पृष्ठ के सामने वाले पन्ने में विश्लेषण, फीचर, स्तंभ एवं साक्षात्कार आदि प्रकाशित होते है, यहीं ऑप-एड होता है|

प्रश्न-38 'डेस्क' किसे कहते है ?

उत्तर- मीडिया में 'डेस्क'से तात्पर्य सम्पादन से है|डेस्क पर समाचारों का सम्पादन करके उन्हें छपने योग्य बनाया जाता है|

प्रश्न-39 समाचारों के सम्पादन में किस बात का ध्यान रखा जाता है?

उत्तर- समाचारों के सम्पादन में तथ्यपरकता, वस्तुपरकता, निष्पक्षता, और संतुलन जैसे सिद्धांतों का ध्यान रखना पड़ता है|

प्रश्न-40 'पत्रकार दीर्घा' क्या है?

उत्तर- वह स्थान जो पत्रकारों को बैठनें के लिए सुरक्षित रहता है, पत्रकार दीर्घा कहलाता है|

प्रश्न- 41 संपादन से क्या तात्पर्य है?

उत्तर- सम्पादन से तात्पर्य है- किसी सामग्री से उसकी अशुद्धियों को को दूर करके उसे पठनीय बनाना|

प्रश्न-41 खोजी पत्रकारिता क्या है?

उत्तर- खोजी पत्रकारिता के अंतर्गत पत्रकार खोजबीन के जरिए ऐसी सूचना लोगों तक लाता है जो पहले लोगों को मालूम नहीं थी|

प्रश्न-42 'इन डेप्थ रिपोर्ट' क्या होती है?

उत्तर- इसके अंतर्गत सार्वजनिक तौर पर उपलब्ध सूचनाओं, आंकड़ों, और तथ्यों की छानबीन करके किसी घटना, समस्या, या मुद्दे से जुड़े पहलुओं को सामने लाया जाता है|

प्रश्न- 43 'एंकर बाइट' का क्या अर्थ है?

उत्तर- किसी घटना को प्रसारित करते समय उससे जुड़े दृश्य, कथन या बातचीत को दर्शकों के सामने प्रस्तुत कर उस घटना की प्रमाणिकता को पुष्ट करना 'एंकर बाइट' कहलाता है|

प्रश्न- 44 'स्तंभ लेखन' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर- महत्वपूर्ण लेखकों के नियमित लेखन क्रम को स्तंभ लेखन कहा जाता है|

प्रश्न-45 'इंट्रो' से आप क्या समझते है?

उत्तर- इंट्रो समाचार के प्रारम्भ का हिस्सा है| इसमें दो-तीन पंक्तियोंमें समाचार की मुख्य बातें बताई जाती है|

प्रश्न-46 इंटरनेट पत्रकारिता को अन्य किन नामों से जाना जाता है?

उत्तर- ऑन लाइन पत्रकारिता , साइबर पत्रकारिता, वेब पत्रकारिता |

प्रश्न- 47 'सम्पादक के नाम पत्र' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर- 'सम्पादक के नाम पत्र' में पाठक विभिन्न विषयों पर अपनी राय व्यक्त करते है|

प्रश्न- 48 पत्रकारीय लेखन में पत्रकार को किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?

उत्तर- पत्रकारीय लेखन में कभी भी पत्रकार को लम्बे-लम्बे वाक्य नहीं लिखने चाहिए एवं अनावश्यक उपमाओं और विशेषणों के प्रयोग से बचना चाहिए |

प्रश्न-49 नयी वेब भाषा को क्या कहते है ?

उत्तर- नयी वेब भाषा को 'एच.टी.एम एल' अर्थात हाइपर टेक्स्ट मार्क्डअप लैंग्वेज कहते है|

प्रश्न-50 'ऑडिएंस' किसे कहते है|

उत्तर- यह दर्शकों, श्रोताओं और पाठकों के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द है|

<u>प्रश्न संख्या- 6</u>

सुझाव: प्रश्न संख्या 6 आलेख या इसके विकल्प के रूप में पुस्तक समीक्षा होगी| इस प्रश्न का उत्तर लिखते समय निम्न सुझाव आपके लिए कारगर होगा -

1- आलेख लिखते समय विषय को तीन भागों में विभाजित कर लें| 1- परिचय 2- तथ्यों एवं आंकड़ों का तर्कपूर्ण विश्लेषण 3- निष्कर्ष |

2- आलेख की भाषा सरल सहज एवं रोचक होनी चाहिए|

3- आलेख लिखते समय भ्रामक एवं संदिग्ध जानकारियों का उल्लेख नहीं करना चाहिए|

1

<u>' गोदामों में सड़ता अनाज और भूख से तड़पते लोग'</u>

भारत विशाल जनसंख्या वाला देश है, जिसमें दिनों-दिन बढ़ोत्तरी होती जा रही है| व्यापारी वर्ग अपनी मनमानी में लगा हुआ है| वह जब चाहे बाजार का ग्राफ ऊपर-नीचे कर दे और उसका परिणाम आम जनता को भुगतना पड़ता है| ऐसा नहीं है कि उत्पादन में आज ज्यादा कमी आई है बल्कि यह व्यवस्था का ही खेल है कि सरकारी गोदामों में अनाज भरा पडा है और उसे वितरित करने की पर्याप्त व्यवस्था नहीं है, फलत: अनाज सड़ रहा है या खुले आकाश के नीचे पड़ा-पड़ा बारिश का इन्तजार कर रहा है| लाखों बोरियां पड़े-पड़े सड़ रहीं है या चूहों की क्षुधापूर्ति का साधन बन रही है और इधर लोग भूख से बेहाल एक-एक दाने को तरस रहे है| सरकार अनाज को संभाल रखने में असमर्थ हो रही है|

देश कि बहुत बड़ी आबादी भूखमरी का शिकार है| करोड़ो लोग अन्न के अभाव में मरणासन्न हो राजे है| विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, आज २० करोड़ लोगों को भरपेट अन्न नहीं मिलता| 99% आदिवासियों को केवल दिन में एक बार ही भोजन मिल पाटा है| विश्व में लगभग 7000 लोग रोज और 25 लाख लोग सालाना भूख से मर जाते है और सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि आज भी भूख से पीड़ित लोगों में एक तिहाई लोग भारत में रहते है|

भारत कि एक विसंगति यह भी है कि जो किसान दिन-रात परिश्रम कर अन्न उगाता है, वहीं भूख या अधखाया रह जाता है | सरकारी-तंत्र को अनाज को गोदामों में सदाना ज्यादा नीतियुक्त लगता है, बजाय इसके कि भूखे की भूख मिटे| यहाँ के कृषिमंत्री यह गंवारा नहीं करते कि सड़ रहा अनाज भूखे लोगों में बाँट दिया जाए| यह भारत का दुर्भाग्य ही कहा जा सकता है|

अभ्यास कार्य-

1- **समाज में बढ़ते अपराध**

2- **महिलाओं के प्रति बढ़ते अपराध**

3- **वाहनों की बढ़ती संख्या**

4- **बाल मजदूरी एक बड़ी समस्या**

5- **चेन्नई में हुई वर्षा से नुकसान**

6- **भारतीय किसानों की समस्या**

अथवा

सुझाव: प्रश्न संख्या 6 आलेख के विकल्प में पुस्तक समीक्षा होगी| पुस्तक समीक्षा लिखते समय निम्न सुझाव आपके लिए कारगर होगा -

1- पुस्तक के लेखक के बारें में जानकरी एकत्र कर लें |

2- आपने जो हाल में पुस्तक पढ़ी हो उसके मूलभाव को सारांश रूप में लिख लें |

3- इस बात को अवश्य बताएं कि पाठक यह पुस्तक क्यों पढ़ें |

4- पुस्तक का मूल्य, प्रकाशक का पता पता एवं उपलब्ध होने के स्थान के बारें में भी अवश्य बताएं|

1 पुस्तक समीक्षा

पुस्तक: सत्य के साथ प्रयोग

लेखक: महात्मा गांधी

महात्मा गाँधी 20 वीं सदी के एक ऐसे महापुरुष हैं जिन्होंने दुनिया को सत्य और अहिंसा के रास्ते पर ले चलते हुए मानवता का पाठ पढ़ाया| गांधी जी जैसे महापुरुष के विषय में जानने की उत्सुकता मेरे अन्दर बहुत दिनों से थी और यह पूरी हुई मेरे पिछले जन्मदिन पर जब मेरे एक मित्र ने उनकी आत्मकथा ' सत्य के साथ प्रयोग'' पुस्तक उपहार स्वरूप दी | इस पुस्तक को पढ़ने के बाद यह प्रमाणित हो जाता है कि इंसान जाति से, धर्म से या कुल से महान नहीं बनता बल्कि वह अपने विचारों और कर्मों से महान बनाता है| गांधी जी ने अपनी इस आत्म कथा में बड़े ही ईमानदारी से जीवन के सभी पक्षों को रखा है| जैसे बचपन की गलतियाँ, पारिवारिक दायित्व, वकालत पढ़ने के लिए इंग्लैंड जाना, पुन: दक्षिण अफ्रीका जाकर नौकरी करना एवं वहां शोषित पीड़ित भारतीयों के हक़ की लड़ाई लड़ना| महात्मा गांधी की यह आत्मकथा भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन और भारतीयों के सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक आर्थिक स्थिति को बड़े मार्मिक रूप में प्रस्तुत करती है| यह पुस्तक हमें गांधी जी के व्यक्तित्व और कृतित्व के अनेक पहलुओं से परिचय कराती है| गांधी जी सत्य एवं अहिंसा के रास्ते पर चलते हुए कभी भी हार न मानने वाले व्यक्ति थे| इस पुस्तक में गांधीजी ने भारत के लोगों को स्वास्थ्य, शिक्षा और स्वच्छता के लिए भी प्रेरित किया साथ ही मिलजुलकर रहने की प्रेरणा दी|

इस पुस्तक की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है इसकी भाषा-शैली | वैसे तो यह हिंदी भाषा में अनुवाद की गयी पुस्तक है फिर भी इसका इसमें सरल सहज एवं प्रभाशाली शब्दों का प्रयोग किया गया है जो पाठकों को पढ़ने के लिए बहुत आकर्षित करता है| अंत में मै आपसे यही कहना चाहूंगा कि विश्व के इस महान पुरुष के विषय में जानना हो तो आप इस पुस्तक को अवश्य पढ़े| नवजीवन प्रकाशन द्वारा प्रकाशित यह पुस्तक आजकल सभी बुक स्टालों पर उपलब्ध है|

2 पुस्तक समीक्षा

पुस्तक: गोदान

लेखक: प्रेमचंद

पुस्तकें ज्ञान का भंडार होती हैं| सच्चा ज्ञान वहीँ है जो हमें अपने आस-पास के प्रति संवेदनशील बनाता है | पिछले दिनों मुझे अपने विद्यालय के पुस्तकालय में प्रेमचंद का की महान कृति ''गोदान'' पुस्तक पढ़ने का सौभाग्य मिला , जिसने मेरे मन को गहराई तक प्रभावित किया और अपने देश के किसानों के हालत के बारे में सोचने के लिए मजबूर कर दिया| 20 वीं सदी के चौथे दशक में लिखा गया यह उपान्यास भारतीय किसान के अनेक स्तरों पर किए गए जीवन संघर्ष की कहानी है | इस उपन्यास का प्रधान नायक होरी है जिसके इर्द-गिर्द पूरी कहानी घूमती है| उपन्यास के अन्य चरित्रों के माध्यम से भी प्रेमचंद ने समाज के अन्य आयामों को प्रतिबिंबित किया है| कर्ज एवं सूद, महाजनों सभ्यता एवं जाति-प्रथा जैसी विषम चुनौतियों से जूझता किसान किस तरह जीवन गुजारता है, इस उपान्यास का प्रमुख केंद्र बिंदु है| आज हम 21 वीं सदी में जी रहे हैं जहां 1 अरब से अधिक जनता का पेट देश का किसान कड़ी मेहनत करके पालता है फिर भी हमारे देश के किसानों की हालत बेहद चिंतनीय है| यह पुस्तक हमें किसानों के जीवन की त्रासदी से परिचित कराकर एक संवेदना जागृत करती है|

इस उपान्यास का सबसे महत्वपूर्ण आकर्षण है इसकी भाषा शैली| प्रेमचंद ने बेहद सरल, सहज और भावपूर्ण भाषा के प्रयोग द्वारा जनता के एक बड़े वर्ग को संवेदनशील बनाने में सफलता प्राप्त की है| मुहावरों लोकोक्तियों और व्यवहारिक सूत्रवाक्यों का प्रभावशाली प्रयोग इस उपान्यास को जनता के करीब ले जाता है| आज यह पुस्तक लगभग सभी बुक स्टालों पर उपलब्ध है| मै आपसे निवेदन करूंगा कि इसे एक बार अवश्य पढ़ें|

<u>प्रश्न संख्या- 7</u>

सुझाव: प्रश्न संख्या 7 फीचर लेखन है (वास्तव में फीचर किसी,वस्तु घटना स्थान या व्यक्ति विशेष की विशेषताओं को उद्घाटित करने वाला विशिष्ट लेख है जिसमे काल्पनिकता, सर्जनात्मकता, तथ्य, घटनाएं एवं भावनाएं एक ही साथ उपस्थित होते हैं) |फीचर लिखते समय निम्न सुझाव आपके लिए कारगर होगा -

1. ***फीचर का आरम्भ आकर्षक होना चाहिए ,जिससे पाठक पढ़ने के लिए उत्साहित हो जाए |***
2. ***फीचर में पाठक की उत्सुकता, जिज्ञासा तथा भावनाओं को जागृत करने की शक्ति होनी चाहिए|***
3. ***फीचर को आकर्षक बनाने हेतु मुहावरों,लोकोक्तियों और व्यक्तिगत जीवन अनुभवों की चर्चा की जा सकती हैं|***
4. ***संवाद शैली का प्रयोग कर आप फीचर को रोचक बना सकते हैं|***

फीचर

चुनावी सभा में नेताजी के वायदे

भारतीय लोकतंत्र विश्व कि सर्वोत्तम शासन प्रणालियों में से एक है| इसमे जनता द्वारा चुने गए प्रतिनिधि , जनता की इच्छाओं को पूरा करने के लिए जनता द्वारा ही शासन चलाते है| जन प्रतिनिधियों को चुनने कि यह प्रणाली चुनाव कहलाती है | आजकल भारत में चुनाव किसी बड़े युद्ध से कम नहीं है|

इन जनयुद्ध में चयनित प्रतिनिधियों को सीधे मतदान प्रणाली से चुना जाता है| इस अवसर पर हर नेता जनता के सामने हाथ जोड़कर उन्हें रिझाने के लिए नए- नए वायदे करता है | ऐसी स्थिति में हर नेता को अपने कद एवं प्रसिद्धि का पता लोगों कि प्रतिक्रियाओं से ही चलता है|

इस बार के विधान सभा चुनाव में मुझे एक नेता के जन सभा देखने का अवसर प्राप्त हुआ| यह जन सभा नगर के एक राजकीय विद्यालय में आयोजित कि गयी थी | इस अवसर पर विद्यालय के लम्बे चौड़े मैदान में एक बड़ा पंडाल लगा था| जिसमे हजारों लोगों को एक साथ बैठने की व्यवस्था की गयी थी| जब पंडाल में भीड़ जुट गयी तब मंच पर नेताओं का आना शुरू हुआ | पहले मंच पर स्थानीय नेताओं ने रंग ज़माना शुरू किया, फिर राष्ट्रीय स्तर के नेताओं ने लच्छेदार भाषण देकर लोगों का संबोधित किया| इन नेताओं ने विपक्षी पार्टी के नेता को जमकर कोसा एवं अपने नेता को जिताने के लिए जनता से वोट मांगते हुए वापस चल दिए साथ ही जनता भी अपने घरों को लौट गयी| विद्यालय के मैदान में बचा रह गया तो केवल ढेर सी गन्दगी एवं कूड़ा-करकट | चुनाव में नेता जीते या नहीं जीते, पर यह सभा मेरे ह्रदय पर नेताओं के विचित्र आचरण कि एक छाप छोड़ गयी|

अभ्यास कार्य-

1- बस्ते का बढ़ता बोझ / गुम होता बचपन
2- गाँवों से पलायन करते लोग
3- मोबाइल के सुख दुःख
4- महँगाई के बोझ तले मजदूर
5- वाहनों की बढ़ती संख्या
6- वरिष्ठ नागरिकों के प्रति हमारा नजरिया
7- किसान का एक दिन

खंड- ग

प्रश्न-8

सुझाव: प्रश्न संख्या 8 पाठ्य पुस्तक क्षितिज के काव्यांश पर आधारित होगा / इस प्रश्न को हल करते समय निम्नलिखित सुझाव आपके लिए कारगर हो सकता

1- *दिए गए काव्यांश को ध्यानपूर्वक दो बार पढ़ें एवं उसके मूल अर्थ को समझने का प्रयास करें /*
2- *दूसरी बार काव्यांश को पढ़ने से पूर्व प्रश्नों को भी पढ़ लें, तत्पश्चात पैंसिल से उत्तर संकेत अंकित करें|*
3- *प्रश्नों का उतर देते समय संतोष जनक उत्तर एवं शब्द सीमा का ध्यान रखें|*
4- *पूछे गए प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिखने का प्रयास करें|*

उदाहरण -1

"आखिरकार वही हुआ जिसका मुझे डर था 2+2+2+2=8
ज़ोर ज़बरदस्ती से
बात की चूड़ी मर गई
और वह भाषा में बेकार घूमने लगी !
हार कर मैंने उसे कील की तरह ठोंक दिया !
ऊपर से ठीकठाक
पर अंदर से
न तो उसमें कसाव था
न ताकत !
बात ने ,जो एक शरारती बच्चे की तरह
मुझसे खेल रही थी,
मुझे पसीना पोंछते देखकर पूछा -
क्या तुमने भाषा को
सहूलियत से बरतना कभी नहीं सीखा ?

प्रश्न-क -बात की चूड़ी कब मर जाती है? उसका क्या परिणाम होता है?
प्रश्न-ख -कील की तरह ठोंकने - का क्या आशय है?
प्रश्न-ग बात की तुलना शरारती बच्चे से क्यों की गई है?
प्रश्न-घ भाषा को सहूलियत से बरतने का क्या आशय है?

उत्तर - नमूना

क. भाषा के साथ जोर-जबरदस्ती करने और तोड़ने-मरोड़ने से उसकी चूड़ी मर जाती है परिणामस्वरूप उसका प्रभाव नष्ट हो जाता है।

ख. सीधी-सरल बात को बड़े-बड़े शब्दों में उलझाकर छोड़ देना।

ग. जैसे बच्चा शरारती अनियंत्रित होता है वैसे ही कई बार बात ठीक ढंग से समझ में नहीं आती है।

घ. भाषा को अनावश्यक ढंग से रस, छंद, अलंकारों में बाँधने के बजाय सहज, सरल और स्वाभाविक ढंग से प्रयोग में लाना ।

उदाहरण -2

"तिरती है समीर-सागर पर 2+2+2+2=8
अस्थिर सुख पर दुःख की छाया -
जग के दग्ध हृदय पर
निर्दय विप्लव की प्लावित माया-
यह तेरी रण-तरी
भरी आकांक्षाओं से ,
घन भेरी -गर्जन से सजग सुप्त अंकुर
उर में पृथ्वी के, आशाओं से नवजीवन की ,ऊंचा कर सिर,
ताक रहे हैं ,ऐ विप्लव के बादल!
फिर -फिर
बार -बार गर्जन
वर्षण है मूसलधार ,
हृदय थाम लेता संसार ,
सुन- सुन घोर वज्र हुंकार |
अशनि पात से शायित शत-शत वीर ,
क्षत -विक्षत हत अचल शरीर,
गगन- स्पर्शी स्पर्द्धा धीर |"

प्रश्न1 :- कविता में बादल किस का प्रतीक है?और क्यों?
प्रश्न 2 :-कवि ने 'जग के दग्ध हृदय'- का प्रयोग किस अर्थ में किया है?
प्रश्न3 :-विप्लवी बादल की युद्ध रूपी नौका की क्या- क्या विशेषताएं हैं?
प्रश्न4 :-बादल के बरसने का गरीब एवं धनी वर्ग से क्या संबंध जोड़ा गया है?

उत्तर 1:-बादलराग क्रांति का प्रतीक है। इन दोनों के आगमन के उपरांत विश्व हरा- भरा. समृद्ध और स्वस्थ हो जाता है।

2- कवि ने शोषण से पीड़ित लोगों को 'जग के दग्ध हृदय'कहा है क्योंकि वे लोग अभाव और शोषण के कारण पीड़ित हैं। वे करुणा का जल चाहते हैं। इसके लिए बादल रूपी क्रांति से बरतने की प्रारथना की गई है।
3- :-बादलों के अंदर आम आदमी की इच्छाएँ भरी हुई हैं।जिस तरह से युद्ध नौका में युद्ध की सामग्री भरी होती है।युद्ध की तरह बादल के आगमन पर रणभेरी बजती है। सामान्यजन की आशाओं के अंकुर एक साथ फूट पड़ते हैं।
4- बादल के बरसने से गरीब वर्ग आशा से भर जाता है एवं धनी वर्ग अपने विनाश की आशंका से भयभीत हो उठता है ।

उदाहरण-- 3

सुत बित नारि भवन परिवारा। होहिं जाहिं जग बारहिं बारा॥
अस बिचारि जियँ जागहु ताता। मिलइ न जगत सहोदर भ्राता॥
जथा पंख बिनु खग अति दीना। मनि बिनु फनि करिबर कर हीना॥
अस मम जिवन बंधु बिनु तोही। जौं जड़ दैव जिआवै मोही॥
जैहउँ अवध कवन मुहु लाई। नारि हेतु प्रिय भाइ गँवाई॥
बरु अपजस सहतेउँ जग माहीं। नारि हानि बिसेष छति नाहीं॥

प्रश्न-1 राम के अनुसार कौन सी वस्तुओं की हानि बड़ी हानि नहीं है और क्यों ?
प्रश्न-2 पंख के बिना पक्षी और सूंड के बिना हाथी की क्या दशा होती है काव्य प्रसंग में इनका उल्लेख क्यों किया गया है ?
प्रश्न-3 जैहउँ अवध कवन मुहु लाई- कथन के पीछे निहित भाव को स्पष्ट कीजिए।
प्रश्न-4 राम ने नारी के विषयमें जो टिप्पणी की है - उस पर विचार कीजिए।
उत्तर- 1 - उत्तर :-राम के अनुसार धन ,पुत्र एवं नारी की हानि बड़ी हानि नहीं है क्योंकि ये सब खो जाने पर पुन: प्राप्त किये जा सकते हैं पर एक बार सगे भाई के खो जाने पर उसे पुन: प्राप्त नहीं किया जा सकता |
2- राम विलाप करते हुए अपनी भावी स्थिति का वर्णन कर रहे हैं कि जैसे पंख के बिना पक्षी और सूंड के बिना हाथी पीड़ित हो जाता है,उनका अस्तित्व नगण्य हो जाता है वैसा ही असहनीय कष्ट राम को लक्ष्मण के न होने से होगा |

3. लक्ष्मण अपने भाई को बहुत प्यार करते हैं। भाई राम कि सेवा के लिए राजमहल त्याग दिया। अब उन्हीं के मूर्च्छित होने पर राम को अत्यंत ग्लानि हो रही है।

4- राम ने नारी के विषय में टिप्पणी की है- 'नारि हानि विसेष छति नाहीं'। यह टिप्पणी वास्तव में प्रलापवश की है। यह अत्यंत दुखी हृदय की चीत्कार मात्र है। इसमें भ्रातृ-शोक व्यक्त हुआ है। इसमें नारी विषयक नीति-वचन खोजना व्यर्थ है।

<u>अभ्यास हेतु प्रश्न</u>

1.

"नौरस गुंचे पंखड़ियों की नाज़ुक गिरहें खोले हैं
या उड़ जाने को रंगो-बू गुलशन में पर तौले हैं |"
तारे आँखे झपकावें हैं जर्रा-जर्रा सोये हैं।
तुम भी सुनो हे यारों ! शब में सन्नाटे कुछ बोले हैं।

प्रश्न1 :- 'नौरस' विशेषण द्वारा कवि किस अर्थ की व्यंजना करना चाहता है ?
प्रश्न2 :- पंखड़ियों की नाज़ुक गिरहें खोलने का क्या अभिप्राय है ?
प्रश्न3 :- 'रंगो- बू गुलशन में पर तौले हैं' - का अर्थ स्पष्ट कीजिए|
प्रश्न4- 'जर्रा-जर्रा सोये हैं'- का क्या आशय है?

2

"ज़िंदगी में जो कुछ भी है
सहर्ष स्वीकारा है ;
इसलिए कि जो कुछ भी मेरा है
वह तुम्हें प्यारा है|
गरबीली गरीबी यह, ये गंभीर अनुभव सबयह वैभव विचार सब
दृढ़ता यह,भीतर की सरिता यह अभिनव सब
मौलिक है, मौलिक है
इसलिए कि पल-पल में
जो कुछ भी जाग्रत है अपलक है-
संवेदन तुम्हारा है!"

प्रश्न 1:- कवि और कविता का नाम लिखिए|
प्रश्न2:- गरबीली गरीबी,भीतर की सरिता आदि प्रयोगों का अर्थ स्पष्ट कीजिए |
प्रश्न 3 :- कवि अपने प्रिय को किस बात का श्रेय दे रहा है ?
प्रश्न 4 - कवि को गरीबी कैसी लगती है और क्यों?

3

"मैं जग-जीवन का भार लिए फिरता हूँ,
फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ,
कर दिया किसी ने झंकृत जिनको छूकर,
मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हूँ
मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ,
मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ"

प्रश्न १:-कवि अपने हृदय में क्या - क्या लिए फिरता है?
प्रश्न २:- कवि का जग से कैसा रिश्ता है ?
प्रश्न३:- परिवेश का व्यक्ति से क्या संबंध है?मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हूँ' - के माध्यमसे कवि क्या कहना चाहता है ?
प्रश्न4- कवि जग का ध्यान क्यों नही किया करता है?

प्रश्न-9

प्रश्न संख्या 9 के अंतर्गत पठित कविता से 2 अंको के 3 प्रश्न सौन्दर्यबोध आधारित पूछे जाएंगे| इन प्रश्नों का उत्तर देते समय निम्न सुझाव आपके लिए कारगर हो सकता है

1- पूर्वज्ञान (अलंकार,रस.छंद ,भाषा एवं बिंब आदि से संबंधित) की पुनरावृत्ति कर लें |

2- कविता की पंक्तियों/ प्रयुक्त शब्दों को उद्धृत करते हुए प्रश्नों का उत्तर दें|

सौंदर्य-बोध संबंधी प्रश्न

उदाहरण - 1.

''जन्म से ही लाते हैं अपने साथ कपास'-
'दिशाओं को मृदंग की बजाते हुए'
'और भी निडर हो कर सुनहले सूरज के सामने आते हैं'।
'छतों को और भी नरम बनाते हुए'।
'जब वे पेंग भरते हुए चले आते हैं
डाल की तरह लचीले वेग से अक्सर।'
छतों के खतरनाक किनारों तक
उस समय गिरने से बचाता है उन्हें
सिर्फ उनके ही रोमांचित शारीर का संगीत'' |

क. प्रस्तुत काव्यांश की भाषा संबंधी दो विशेषताएँ बताइए।
ख. बिम्ब सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।
ग. शिल्प-सौदर्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

क. साहित्यिक खड़ी बोली के साथ-साथ तत्सम और उर्दू शब्दों की प्रमुखता है।

ख. दिशाओं को मृदंग की तरह बजाना, डाल की तरह लचीले वेग से, पेंग भरते हुए इत्यादि बिम्ब नवीन और दर्शनीय हैं।

ग. बच्चे के उत्साह के लिए पेंग भरना, लचीले वेग, बेचैन पैर का प्रयोग दर्शनीय है। उपमाओं का सूक्ष्म एवं मनोरम प्रयोग दृष्टव्य है। शैली में रोचकता है।

2

"प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसे
भोर का नभ
राख से लीपा चौका
(अभी गीला पड़ा है)
बहुत काली सिल ज़रा से लाल केसर
से कि जैसे धुल गई हो
स्लेट पर या लाल खड़िया चाक
मल दी हो किसी ने
नील जल में या किसी की
गौर झिलमिल देह
जैसे हिल रही हो |
और .....
जादू टूटता है इस उषा का अब
सूर्योदय हो रहा है|"

प्रश्न 1- कविता की भाषा एवं अभिव्यक्ति संबंधी विशेषताएं लिखिए।

प्रश्न 2- कविता में आए दो अलंकारों को छाँटकर लिखिए।

प्रश्न 3- काव्यांश में प्रयुक्त बिंब योजना स्पष्ट कीजिए।

उत्तर 1- भाषा सहज और संस्कृतनिष्ठ हिंदी है। बिम्बात्मकता के साथ लघु शब्दावलीयुक्त मुक्त छंद का सुंदर प्रयोग हुआ है।

2- उपमा अलंकार:- भोर का नभ, राख से लीपा चौका

उत्प्रेक्षा अलंकार:-"बहुत काली सिल जरा से लाल केसर से कि जैसे धुल गई हो।

'नील जल में या किसी कीगौर झिलमिल देह जैसे हिल रही हो'

मानवीकरण अलंकार का प्रयोग।

3- नवीन और ग्रामीण उपमानों का सुंदर प्रयोग हुआ है। गतिशील दृश्य बिम्बों की सुंदर छटा दर्शनीय है।

3

“किसबी, किसान-कुल ,बनिक, भिखारी ,भाट,
चाकर ,चपल नट ,चोर, चार ,चेटकी|
पेटको पढ्त,गुन गढ़त, चढ़त गिरि,
अटत गहन -गन अहन अखेट्की|
ऊंचे -नीचे करम ,धरम -अधरम करि,
पेट ही को पचत, बचत बेटा -बेटकी |
‘तुलसी’ बुझाई एक राम घनस्याम ही तें ,
आगि बड़वागितें बड़ी है आगि पेटकी|”

प्रश्न१:- कवितावली किस भाषा में लिखी गई है?

प्रश्न२:- कवितावली में प्रयुक्त छंद एवं रस को स्पष्ट कीजिए |

प्रश्न३:- कवित्त में प्रयुक्त अलंकारों को छांट कर लिखिए |

उत्तर 1- उत्तर :- चलती हुई ब्रज भाषा का सुंदर प्रयोग।

2- इस पद में 31. 31 वर्णों का चार चरणों वाला समवर्णिक कवित्त छंद है जिसमें 16 एवं 15 वर्णों पर विराम होता है। करुण रस की अभिव्यक्ति।

3- क- अनुप्रास अंलकार-

किसबी, किसान-कुल ,बनिक, भिखारी ,भाट,
चाकर ,चपल नट ,चोर, चार ,चेटकी|

ख. रूपक अलंकार- राम- घनश्याम

ग. अतिशयोक्ति अलंकार- आगि बड़वागितें बड़ि है आग पेट की।

<u>अभ्यास हेतु प्रश्न</u>

1

“नहला के छलके-छलके निर्मल जल से
उलझे हुए गेसुओं में कंघी करके
किस प्यार से देखता है बच्चा मुँह को
जब घुटनियों में लेके है पिन्हाती कपड़े”|

प्रश्न1- काव्यांश में प्रयुक्त रस और छंद को स्पष्ट कीजिए।

2- भाषा सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

3- बिम्ब और अलंकार स्पष्ट कीजिए।

2

“छोटा मेरा खेत चौकोना
कागज़ का एक पन्ना ,कोई अंधड़ कहीं से आया
क्षण का बीज वहाँ बोया गया|
कल्पना के रसायनों को पी
बीज गल गया नि:शेष ;शब्द के अंकुर फूटे ,
पल्लव -पुष्पों से नमित हुआ विशेष |”

प्रश्न 1- काव्यांश के भाषिक सौंदर्य को स्पष्ट कीजिए।
2- काव्याँश में प्रयुक्त अलंकार खोजकर लिखिए।
3- ‘बीज गल गया निःशेष’ के सौदर्य स्पष्ट कीजिए।

3

“जाने क्या रिश्ता है, जाने क्या नाता है
जितना भी उंडेलता हूँ ,भर -भर फिर आता है
दिल में क्या झरना है ?
मीठे पानी का सोता है
भीतर वह ,ऊपर तुम
मुस्काता चाँद ज्यों धरती पर रात- भर
मुझ पर त्यों तुम्हारा ही खिलता वह चेहरा है |”
प्रश्न1 - कविता की भाषा संबंधी दो विशेषताएँ लिखिए |
प्रश्न-2 - काव्यांश में प्रयुक्त अलंकार खोजकर बताइए।
प्रश्न-3 काव्यांश में प्रयुक्त उपमानों का अर्थ बताइए।

प्रश्न- संख्या 10

इसके अंतर्गत पठित कविताओं के विषय-वस्तु पर आधारित प्रश्न 3 अंक के 2 प्रश्न पूछे जाएंगे| इन प्रश्नों का उत्तर देते समय निम्न सुझाव पर ध्यान दें|

1- पाठ्य-पुस्तक क्षितिज में दी गयी कविताओं के मूलभाव / अर्थ को बार बार अध्ययन कर समझने का प्रयास करें |
2- पूछे गए प्रश्न को कम से कम दो बार पढ़े एवं तार्किक ढंग से उत्तर लिखे |

प्रश्न 10- कविताओं की विषय-वस्तु से संबंधित दो लघूत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे। 3+3 =6
इन प्रश्नों के उत्तर के लिए सभी कविताओं के सारांश\सार जानना आवश्यक होता है।
नमूना 1- कैमरे में अपाहिज' करुणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता की कविता है? विचार कीजिए।

उत्तर- यह कविता मानवीय करुणा को तो व्यक्त करती ही है; साथ ही इस कविता में ऐसे लोगों की बनावटी करुणा का भी वर्णन मिलता है जो दुख-दर्द बेंचकर प्रसिद्धि एवं आर्थिक लाभ प्राप्त करना चाहते हैं। एक अपाहिज की करुणा को पैसे के लिए टेलीवीजन पर दर्शाना वास्तव में क्रूरता की चरम सीमा है। किसी की करुणा, अभाव, हीनता कष्ट को बेचकर अपना हित साधना नितांत क्रूराता की श्रेणी में आता है। कविता में इसी प्रकार की क्रूरता व्यक्त हुई है।

2- 'सहर्ष स्वीकारा है' कविता में कवि को अपने अनुभव विशिष्ट एवं मौलिक लगते हैं। क्यों? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:-कवि को अपनी स्वाभिमानयुक्त गरीबी, जीवन के गम्भीर अनुभव विचारों का वैभव, व्यक्तित्व की दृढ़ता, मन की भावनाओं की नदी, यह सब नए रूप में मौलिक लगते हैं क्यों कि उसके जीवन में जो कुछ भी घटता है वह जाग्रत है, विश्व उपयोगी है अत: उसकी उपलब्धि है और वह उसकी प्रिया की प्रेरणा से ही संभव हुआ है। उसके जीवन का प्रत्येक अभाव ऊर्जा बनकर जीवन में नई दिशा ही देता रहा है |

प्रश्न3:- कविता के किन उपमानों को देख कर कहा जा सकता है कि उषा गाँव की सुबह का गतिशील शब्द चित्र है ?

उत्तर :-कविता में नीले नभ को राख से लिपे गीले चौके के समान बताया गया है | दूसरे बिंब में उसकी तुलना काली सिल से की गई है| तीसरे में स्लेट पर लाल खड़िया चाक का उपमान है|लीपा हुआ आँगन ,काली सिल या स्लेट गाँव के परिवेश से ही लिए गए हैं |प्रात: कालीन सौंदर्य क्रमश: विकसित होता है। सर्वप्रथम राख से लीपा चौका जो गीली राख के कारण गहरे स्लेटी रंग का अहसास देता है और पौ फटने के समय आकाश के गहरे स्लेटी रंग से मेल खाता है।उसके पश्चात तनिक लालिमा के मिश्रण से काली सिल का जरा से लाल केसर से धुलना सटीक उपमान है तथा सूर्य की लालिमा के रात की काली स्याही में घुल जाने का सुंदर बिंब प्रस्तुत करता है| धीरे -धीरे लालिमा भी समाप्त हो जाती है और सुबह का नीला आकाश नील जल का आभास देता है व सूर्य की स्वर्णिम आभा गौरवर्णी देह के नील जल में नहा कर निकलने की उपमा को सार्थक सिद्ध करती है |

प्रश्न 4- 'अशनि-पात से शापित उन्नत शत-शत वीर' पंक्ति में किसकी ओर संकेतकिया गया है?

उत्तर:- इस पंक्ति में कवि ने क्रांति के विरोधी पूंजीपति-सामंती वर्ग की ओर संकेत किया है। जिस प्रकार बादल की गर्जना के साथ बिजली गिरने से बड़े -बड़े वृक्ष जल कर राख हो जाते हैं | उसी प्रकार क्रांति की आंधी आने से शोषक, धनी वर्ग की सत्ता समाप्त हो जाती है और वे खत्म हो जाते हैं |

प्रश्न 5- छोटे चौकोने खेत को कागज का पन्ना कहने में क्या अर्थ निहित है? पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- कागज का पन्ना, जिस पर रचना शब्दबद्ध होती है, कवि को एक चौकोर खेतलगता है। इस खेत में किसी अँधड़ (आशय भावनात्मक आँधी से होगा) के प्रभाव से किसी क्षण एक बीज बोया जाता है। यह बीज-रचना विचार और अभिव्यक्ति का हो सकता है। यह मूल रूप कल्पना का सहारा लेकर विकसित होता है और प्रक्रिया में स्वयं विगलित हो जाता है। इसीप्रकार बीज भी खाद, पानी, सूर्य की रोशनी,हवा आदि लेकर विकसित होता है | काव्य-रचना से शब्दों के अंकुर निकलते हैं और अंततः कृति एक पूर्ण स्वरूप ग्रहण करती है, जो कृषि-कर्म के लिहाज से पल्लवित-पुष्पित और फलित होने की स्थिति है।

<u>अभ्यास हेतु प्रश्न-</u>

1- जहाँ दाना रहते हैं वहीं नादान भी रहते हैं। कवि ने ऐसा क्यों कहा है। पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।
2- कवि के जीवन में ऐसा क्या-क्या है जिसे उसने स्वीकार किया है और क्यों?
3- अस्थिर सुख पर दुख की छाया - पंक्ति में दुख की छया किसे कहा गया है और क्यों?
4- शोक-ग्रस्त माहौल में हनुमान के अवतरण को करुण रस के बीच वीर रस का आविर्भाव क्यों कहा गया है? पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
5- खुद का परदा खोलने से कवि का क्या आशय है? पठित पाठ के आधार पर लिखिए।
6- 'रस का अक्षय-पात्र' से कवि ने रचना-कर्म की किन विशेषताओं को इंगित गया है? छोटा मेरा खेत- पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न-11

इसके अंतर्गत पठित गद्यांश दिया जाएगा जिस पर 2 अंकों के 4 प्रश्न पूछे जाएंगे| इस प्रश्न का उत्तर देते समय निम्न सुझाव आपके लिए लाभदायक हो सकता है|

1- दिए गए गद्यांश को ध्यान से दो बार ध्यान से पढ़े|
2- दूसरी बार गद्यांश को पढ़ने से पूर्व प्रश्नों को पढ़े एवं गद्यांश में उत्तर संकेत मिलने पर पेंसिल से अंकित करें|
3- प्रश्नों के उत्तर देते समय गद्यांश के पंक्तियों को ज्यों का त्यों लिखने से बचे| |

उदाहरण-1

बाजार में एक जादू है। वह जादू आँख की तरह काम करता है। वह रूप का जादू है पर जैसे चुंबक का जादू लोहे पर ही चलता है, वैसे ही इस जादू की भी मर्यादा है जेब भरी हो, और मन खाली हो, ऐसी हालत में जादू का असर खूब होता है । जेब खाली पर मन भरा न हो तो भी जादू चल जाएगा। मन खाली है तो बाजार की अनेकानेक चीजों का निमंत्रण उस तक पहुँच जाएगा। कहीं उस वक्त जेब भरी, तब तो फिर वह मन किसकी मानने वाला है। मालूम होता है यह भी लूँ, वह भी लूँ। सभी सामान जरूरी और आराम को बढ़ाने वाला मालूम होता है पर यह सब जादू का असर है। जादू की सवारी उतरी कि पता चलता है कि फैंसी-चीजों की बहुतायत आराम में मदद नहीं देती, बल्कि खलल ही डालती है। थोड़ी देर को स्वाभिमान को जरूर सेंक मिल जाता है पर इससे अभिमान को गिल्टी की खुराक ही मिलती है। जकड़ रेशमी डोरी की हो तो रेशम के स्पर्श के मुलायम के कारण क्या वह कम जकड़ देगी ?

पर उस जादू की जकड़ से बचने का एक सीधा उपाय है वह यह कि बाजार जाओ तो खाली मन न हो । मन खाली हो तब बाजार न जाओ कहते हैं, लू में जाना हो तो पानी पीकर जाना चाहिए पानी भीतर हो, लू का लूपन व्यर्थ हो जाता है। मन लक्ष्य से भरा हो तो बाजार फैला का फैला ही रह जाएगा। तब वह घाव बिलकुल नहीं दे सकेगा, बल्कि कुछ आनंद ही देगा। तब बाजार तुमसे कृतार्थ होगा, क्योंकि तुम कुछ न कुछ सच्चा लाभ उसे दोगे। बाजार की असली कृतार्थता है आवश्यकता के समय काम आना।

2+2+2+2=8

प्रश्न-1 बाजार का जादू हमें कैसे प्रभावित करता है ?

उत्तर- बाजार के रूप का जादू आँखों की राह से काम करता हुआ हमें आकर्षित करता है। बाजार का जादू ऐसे चलता है जैसे लोहे के ऊपर चुंबक का जादू चलता है। चमचमाती रोशनी में सजी फैंसी चींजें ग्राहक को अपनी ओर आकर्षित करती हैं| इसी चुम्बकीय शक्ति के कारण व्यक्ति फिजूल सामान को भी खरीद लेता है |

प्रश्न-2 बाजारके जादू का असर कब होता है ?

उत्तर- जेब भरी हो और मन खाली हो तो हमारे ऊपर बाजार का जादू खूब असर करता है। मन, खाली है तो बाजार की अनेकानेक चीजों का निमंत्रण मन तक पहुँच जाता है और उस समय यदि जेब भरी हो तो मन हमारे नियंत्रण में नहीं रहता।

प्रश्न-3 फैंसी चीजों की बहुतायत का क्या परिणाम होता है?

उत्तर- फैंसी चीजें आराम की जगह आराम में व्यवधान ही डालती है। थोड़ी देर को अभिमान को जरूर सेंक मिल जाती है पर दिखावे की प्रवृत्ति में वृद्धि होती है।

प्रश्न-4लेखक ने जादू की जकड़ से बचने का क्या उपाय बतायाहै ?

उत्तर- जादू की जकड़ से बचने के लिए एक ही उपाय है, वह यह है कि बाजार जाओ तो मन खाली न हो, मन खाली हो तो बाजार मत जाओ।

उदाहरण- 2

अँधेरी रात चुपचाप आँसू बहा रही थी | निस्तब्धता करुण सिसकियों और आहों को अपने हृदय में ही बल पूर्वक दबाने की चेष्टा कर रही थी | आकाश में तारे चमक रहे थे | पृथ्वी पर कहीं प्रकाश का नाम नहीं| आकाश से टूट कर यदि कोई भावुक तारा पृथ्वी पर आना भी चाहता तो उसकी ज्योति और शक्ति रास्ते में ही शेष हो जाती थी | अन्य तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता पर खिलखिलाकर हँस पड़ते थे | सियारों का क्रंदन और पेचक की डरावनी आवाज रात की निस्तब्धता को भंग करती थी | गाँव की झोपडियों से कराहने और कै करने की आवाज, हरे राम हे भगवान की टेर सुनाई पड़ती थी| बच्चे भी निर्बल कंठों से माँ -माँ पुकारकर रो पड़ते थे |

प्रश्न - 2+2+2+2=8

1. इस गद्यांश के लेखक और पाठ का नाम लिखिए।

2- **अँधेरी रात को आँसू बहाते हुए क्यों प्रतीत हो रही है ?**

3- तारों के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है?

4- झोपड़ियों से कराहनेकी आवाजें क्योंआ रही हैं?

उत्तर- 1- फणीश्वर नाथ रेणु - पहलवान की ढोलक

2- गाँव में हैजा और मलेरिया फैला हुआ था | महामारी की चपेट में आकार लोग मर रहे थे|चारों ओर मौत का सनाटा छाया था इसलिए अँधेरी रात भी चुपचाप आँसू बहाती सी प्रतीत हो रही थी|

3- तारों के माध्यम से लेखक कहना चाहता है कि अकाल और महामारी से त्रस्त गाँव वालों की पीड़ा को दूर करने वाला कोई नहीं था | प्रकृति भी गाँव वालों के दुःख से दुखी थी| आकाश से टूट कर यदि कोई भावुक तारा पृथ्वी पर आना भी चाहता तो उसकी ज्योति और शक्ति रास्ते में ही शेष हो जाती थी |

4- झोपड़ियों से रोगियों के कराहने, कै करने और रोने की आवाजें आ रही हैं क्योंकि गाँव के लोग मलेरिया और हैजे से पीड़ित थे | अकाल के कारण अन्न की कमी हो गयी थी| औषधि और पथ्य न मिलने के कारण लोगों की हालत इतनी बुरी थी कि कोई भगवान को पुकार लगाता था तो कोई दुर्बल कंठ से माँ-माँ पुकारता था |

उदाहरण- 3

अब तक सफिया का गुस्सा उतर चुका था। भावना के स्थान पर बुद्धि धीरे-धीरे उस स्थान पर हावी हो रही थीं नमक की पुड़िया तो ले जानी है, पर कैसे? अच्छा, अगर इसे हाथ में ले लें और कस्टम वालों के सामने सबसे पहले इसी को रख दें?लेकिन अगर कस्टमवालों ने न जाने दिया! तो मजबूरी है, छोड़ देंगें। लेकिन फिर उस वायदे का क्या होगा जो हमने अपनी माँ से किया था?हम अपने को सैयद कहते हैं।

फिर वायदा करके झुठलाने के क्या मायने? जान देकर भी वायदा पूरा करना होगा। मगर कैसे?अच्छा! अगर इसे कीनुओं की टोकरी में सबसे नीचे रख लिया जाए तो इतने कीनुओं के ढेर में भला कौन इसे देखेगा? और अगर देख लिया? नहीं जी,फलों की टोकरियाँ तो आते वक्त भी किसी की नहीं देखी जा रही थीं। इधर से केले, इधर से कीनू सब ही ला रहे थे, ले जा रहे थे। यही ठीक है,फिर देखा जाएगा।

प्रश्न- 2+2+2+2=8

(क) सफिया का गुस्सा क्यों उतर गया था?

(ख) सफिया की क्या भावना थी और वह उसकी बुद्धि के सामने किस प्रकार परास्त हो गई?

(ग) सफिया की उधेड़बुन का क्या कारण है?

(घ) सफिया ने किस वायदे को पूरा करने की बात की है?उसे उसने किस प्रकार पूरा किया।

उत्तर- 1 उसके भाई से नमक ले जाने के संबंध में वाद-विवाद हो गया था।

2- सफिया चाहती थी कि नमक खुले-आम ले जाए लेकिन उसे अब डर सताने लगा था कि अगर न ले जाने दिया जाएगा तो क्या होगा!

3- वह नमक ले जाना चाहती थी लेकिन कैसे ले जाए। वह छुपा कर ले जाए या दिखाकर; वह इसी उधेड़बुन में पड़ी थी।

4 -सफिया नमक ले जाने का वादा पूरा करना चाहती थी। उसने नमक की पुड़िया को कीनुओं की टोकरी में रख लिया और सोचा कि कीनुओं के साथ नमक भी चला जाएगा और किसी को कोई शक भी नहीं होगा।

<u>अभ्यास हेतु प्रश्न-1</u>

चार्ली की अधिकांश फिल्में भाषा का इस्तेमाल नहीं करती इसलिए उन्हें ज्यादा से ज्यादा मानवीय होना पडा।सवाक् चित्रपट पर कई बडे-बडे कॉमेडियन हुए हैं, लेकिन वे चैप्लिन की सार्वभौमिकता तक क्यों नहीं पहुँच पाए इसकी पड़ताल अभी होने को है। चार्ली का चिर-युवा होना या बच्चों जैसा दिखना एक विशेषता तो है ही,सबसे बड़ी विशेषता शायद यह है कि वे किसी भी संस्कृति को विदेशी नहीं लगते। यानी उनके आसपास जो भी चीजें,अड़ंगें, खलनायक, दुष्ट औरतें आदि रहते हैं वे एक सतत 'विदेश' या 'परदेश' बन जाते हैं और चैप्लिन 'हम' बन जाते हैं। चार्ली के सारे संकटों में हमें यह भी लगता है कि यह 'मै' भी हो सकता हूँ, लेकिन 'मै' से ज्यादा चार्ली हमें 'हम' लगतेहैं। यह संभव है कि कुछ अर्थों में 'बस्टर कीटन' चार्ली चैप्लिन से बड़ी हास्य-प्रतिभा हो लेकिन कीटन हास्य का काफ्का है जबकि चैप्लिन प्रेमचंद के ज्यादा नजदीक हैं।

क -चार्ली की अधिकांश फिल्मों में भाषा का इस्तेमाल क्यों नहीं होता था?

ख-चार्ली चैप्लिन की सार्वभौमिकता का क्या कारण है ?

ग- चार्ली की फिल्मों की विशेषता क्या है ?

घ- चार्ली के कारनामें हमें 'मैं' न लगकर 'हम' क्यों लगते हैं ?

<u>अभ्यास हेतु प्रश्न-2</u>

अवधूतों के मुख से ही संसार की सबसे सरस रचनाएं निकली हैं। कबीर बहुत कुछ इस शिरीष के समान ही थे, मस्त और बे परवा, पर सरस और मादक्। कालिदास भी ज़रूर अनासक्त योगी रहे होंगे। शिरीष के फूल फक्कड़ाना मस्ती से ही उपज सकते हैं और 'मेघदूत'का काव्य उसी प्रकार के अनासक्त अनाविल उन्मुक्त हृदय में उमड़ सकता है। जो कवि अनासक्त नहीं रह सका, तो फक्कड़ नहीं बन सका, जो किए-कराए का लेखा-जोखा मिलाने में उलझ गया, वह भी क्या कवि है ?

क. संसार की सबसे सरस रचनाएं कौन सी हैं ?

ख. लेखक ने शिरीष की तुलना किससे की है और क्यों ?

ग. कालिदास को अनासक्त योगी क्यों कहा गया है ?

घ. इस गद्यांश का लेखक कौन है? सच्चा कवि किसे कहा गया है ?

प्रश्न संख्या -12

इसके अंतर्गत पठित पाठ्य-पुस्तक के गद्य भाग के विषय वस्तु पर आधारित 3 अंक के 4 बोधात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे| इसका उत्तर देते समय निम्न सुझाव आपके लिए कारगर हो सकता है-

1- प्रश्नों को ध्यान से पढ़ें|

2- हल करते समय शब्द सीमा का ध्यान रखते हुए प्रश्नों को तार्किक ढंग से लिखिए |

उदाहरण- 1

1.भक्तिन पाठ के आधार पर सिद्ध कीजिए कि ग्रामीण समाज में लड़के-लड़कियों में भेद-भाव किया जाता था।

2-लेखक ने बाजार का जादू किसे कहा है? बाद में इसका क्या प्रभाव पड़ता है?

3- **आशय स्पष्ट कीजिए- 'चैप्लिन ने सिर्फ फिल्मकला को ही लोकतांत्रिक नही बनाया बल्कि दर्शकों की वर्ग तथा वर्ण-व्यवस्था को भी तोड़ा'।**

4 - भीमराव अंबेडकर जातिप्रथा को श्रम-विभाजन का ही एक रूप मानते थे। क्यों?

उत्तर-

1 - लड़के को सोने का सिक्का जबकि लड़की को खोटा सिक्का माना जाता था। लड़के खेलेते-कूदते, लड़की गोबर पाथती थी।इसी प्रकार खाने-पीने में भी भेदभाव किया जाता था। भक्तिन केवल बेटियों की माँ थी और उसकी सास एवं दोनों जेठानियाँ बेटों की माँ थी इसीलिए भक्तिन को परिवार में उपेक्षा और घृणा की दृष्टि से देखा जाता था जबकि जिठानियाँ सारा दिन इधर-उधर की बातें करती, गप्पें लड़ाती दूध-भात खाती थी।

2- बाजार की चमक-दमक के चुंबकीय आकर्षण को बाजार का जादू कहा गया है, यह जादू आंखों की राह कार्य करता है। बाजार के इसी आकर्षण के कारण ग्राहक सजी-धजी चीजों को आवश्यकता न होने पर भी खरीदने को विवश हो जाते हैं। उसे सभी वस्तुएँ अनिवार्य और आराम बढ़ाने वाली मालूम होती

हैं। यही फैंसी चीजें बाजार के जादू के उतरने के बाद उसके आराम में मदद नहीं बल्कि खलल ही डालती हैं।

3- लोकतांत्रिक बनाने का अर्थ है कि किसी के साथ भेदभाव न करना बल्कि सभी के लिए लोकप्रिय बनाना। चैप्लिन की फिल्मों को हर वर्ग के लोग पसंद करते थे। एक मजदूर से लेकर वैज्ञानिक तक सभी लोगों को उनकी फ़िल्में पसंद थी। वर्ग और वर्ण व्यवस्था को तोड़ने का अर्थ है कि चार्ली के अभिनय को प्रत्येक वर्ग, प्रत्येक जाति का व्यक्ति पसंद करता और सराहता है। हर व्यक्ति चार्ली में अपनी छवि देखता है। मैं इस बात से पूरी तरह से सहमत हूँ कि चार्ली ने अपने अभिनय से मनोरंजन की दुनिया का हर अंतर मिटा दिया है।

4. जाति-प्रथा रुचि पर आधारित नहीं ।

क्षमता और स्तर का ध्यान नहीं रखा गया है।

जीवन भर एक व्यवसाय में बाँध देती है।

विपरीत परिस्थितियों में भी पेशा बदलने की अनुमति नहीं।

व्यक्ति के जन्म से पहले ही श्रम-विभाजन होना अनुचित है।

<u>अभ्यास हेतु प्रश्न</u>

1- डॉ० भीमराव अंबेडकर जातिप्रथा को श्रम-विभाजन का ही एक रूप मानते थे। वे इसका विरोध करते थे। क्यों?

2- लेखक ने शिरीष को कालजयी अवधूत की तरह क्यों माना है? पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

3- 'नमक ले जाने के बारे में सफिया के मन में उठे द्वंद्वों के आधार पर सफिया की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए |

4- **चार्ली चैप्लिन की फिल्मों में निहित त्रासदी/करुणा/हास्य का सामंजस्य भारतीय कला और सौंदर्यशास्त्र की परिधि में क्यों नहीं आता?**

5- गाँव में महामारी फैलने और अपने बेटों के देहांत के बावजूद लुट्टन पहलवान ढोल क्यों बजाता रहा?

6- जीजी ने इंदर सेना पर पानी फेंके जाने को किस तरह सही ठहराया?

7- बाजारूपन से क्या तात्पर्य है? किस प्रकार के व्यक्ति बाजार को सार्थकता प्रदान करते हैं अथवा बाजार की सार्थकता किसमें है?

8- भक्तिन अच्छी है - यह कहना कठिन होगा, क्योंकि उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं है,लेखिका ने ऐसा क्यों कहा होगा?

<u>प्रश्न-संख्या 13</u>

वितान(पूरक पाठ्य-पुस्तक) भाग-2

इसके अंतर्गत पूरक पुस्तक वितान से 5 अंक का एक मूल्य आधारित प्रश्न पूछा जाएगा| इस प्रश्न का उत्तर दते समय आप निम्न बातों का ध्यान रखें|

1- पूरक पुस्तक में दिए गए पाठों के मूलभाव को अच्छी प्रकार समझ लें|

2- प्रश्न को ध्यान से पढ़कर पूछे गए निहित मूल्य को समझने का प्रयास करें एवं उचित उत्तर दें|

प्रश्न 13 पाठों की विषय-वस्तु पर आधारित एक मूल्यपरक प्रश्न पूछा जाएगा। - 5 अंक

1* सिन्धु सभ्यता से जुड़े इतिहासकारों का मानना है कि यह सभ्यता विश्व में पहली ज्ञात संस्कृति है जो कुएँ खोदकर भू-जल तक पहुँची। अकेले मुअनजो-दड़ों नगर में सात सौ कुएँ हैं। यहाँ का **महाकुंड** लगभग चालीस फुट लम्बा ओर पच्चीस फुट चौड़ा है| इस प्रकार मुअनजो-दड़ों में पानी की व्यवस्था सभ्य समाज की पहचान है।

प्रश्न-मुअनजो-दड़ो में पानी की उत्तम व्यवस्था थी। क्या पानी की उत्तम व्यवस्था को सभ्य समाज की पहचान माना जा सकता है ? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर- मुअनजो-दड़ो में पानी के स्रोत की अच्छी व्यवस्था थी साथ ही पानी के निकासी की भी उत्तम व्यवस्था थी। जल ही जीवन है । स्व्च्छ पेय-जल सब को प्राप्त हो ऐसा सभी का मानना है। आज भी बहुत सारी सरकारें चुनाव के घोषणा पत्र में स्वच्छ जल मुहैया कराने का वादा करती हैं। उन्हें मालूम है कि पानी हमारे जीवन का अभिन्न अंग है। आजकल बोतल बंद पानी धड़ल्ले से खरीदा और बेचा जा रहा है। सभी लोग स्वच्छ जल के प्रति जागरूक हो चुके हैं। स्वच्छ जल की आपूर्ति से न केवल प्यास बुझती है अपितु स्वास्थ्य भी ठीक रहता है। अतः कहा जा सकता है कि उचित जल का प्रबंध करना सभ्य समाज की पहचान है।

2* 'प्रकृति-प्रदत्त जनन-शक्ति के उपयोग का अधिकार बच्चे पैदा करें या न करें अथवा कितने बच्चे पैदा करें- इसकी स्वतंत्रता स्त्री से छीन कर हमारी विश्व व्यवस्था ने न सिर्फ स्त्री के व्यक्तित्व- विकास के अनेक अवसरों से वंचित किया है बल्कि जनाधिक्य की समस्या भी पैदा की है।

पठित अंश के आधार पर ऐन फ्रैंक के विचारों से आप कहाँ तक सहमत हैं। सोचकर उत्तर दीजिए।

उत्तर- ऐन यह मानती हैं कि पुरुष अपनी शारीरिक क्षमता के कारण नारियों पर शासन करते हैं। वह यह भी मानती है कि विश्व में नारियों को उचित अधिकार और सम्मान नहीं मिल रहा है। उसका मानना है कि नारी बच्चे को जन्म देते समय जो पीड़ा या कष्ट सहती है वह किसी भी युद्ध में लडने वाले सैनिकों से कम नहीं है। औरतों ने अपनी बेवकूफी के कारण कष्ट, उपेक्षा व असम्मान को सहन किया है। औरतों को उनके हिस्से का सम्मान मिलना चाहिए।

ऐन का यह मानना बिल्कुल उचित है कि औरतों को बच्चा जनना बंद नहीं करना चाहिए बल्कि बच्चा जनने में उसकी इच्छा और रजमंदी जरूरी होनी चाहिए। आज स्थिति बदली है। स्त्रियाँ जागरूक हुई हैं। वे अपने अधिकार और कर्तव्य के प्रति सजग हुई हैं। मेरा मानना है कि स्त्रियों के संबंध में ऐन के विचार पूरी तरह आधुनिक और उचित है।

प्रश्न-अभ्यास

1. आप अगर भूषण की जगह होते तो अपने पिता जी का सिल्वर वैडिंग कैसे मनाते ? सोचकर लिखिए।
2. कविता के प्रति लगाव के बाद 'जूझ' कहानी के लेखक को अकेलापन अच्छा लगने लगा। आपको अकेलापन कब अच्छा लगता है? सोचकर लिखिए।
3. आनंदा के अध्यापक ने उसका आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए सदैव प्रयास किया। कक्षा में बच्चों के आत्मविश्वास को किस प्रकार बढ़ाया जा सकता है? विचार कीजिए।
4. क्या आप मानते हैं कि ऐन फ्रैक ने मजबूरी में डायरी लेखन किया? आप उसकी जगह होते/होती तो क्या करते/करती।

<u>प्रश्न संख्या -14</u>

इसके अंतर्गत पूरक पुस्तक के पाठों के विषय वस्तु पर आधारित 5 अंक के 2 प्रश्न पूछे जाएंगे| इन प्रश्नों का उत्तर देते समय निम्न बातों का ध्यान दें|

1- प्रत्येक अध्यायों को ध्यानपूर्वक पढ़कर उसके मूलभाव को समझ लें|

2- प्रश्नों का उत्तर तार्किक ढंग से समझाते हुए विस्तार से लिखे |

3- शब्द सीमा एवं समय का ध्यान रखें|

उदाहरण-1

प्रश्न-1 'सिंधु सभ्यता साधन संपन्न थी पर उसमें भव्यता का आडंबर नहीं था'|प्रस्तुत कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं?

प्रश्न-2 'ऐन फ्रैंक की डायरी यहूदियों पर हुए जुल्मों का जीवंत दस्तावेज है' पाठ के आधार पर यहूदियों पर हुए अत्याचारों का विवरण दें।

उत्तर 1-सांस्कृतिक धरातल पर यह तथ्य सामने आता है कि सिंधु सभ्यता में एक सुनियोजित नगर व्यवस्था थी। पानी की उत्तम व्यवस्था और आवा-गमन के लिए बैलगाड़ी थी। काँसे के बरतन,चाक पर बने मृद-भांड, उन पर बने चित्र, चौपड़ की गोटियाँ, ताँबे का दर्पण, कंघी, मनकेका हार, सोने के गहने उनकी सम्पन्नता के सूचक हैं। उनके समाज में एक रूपता थी। कला में सुरुचि थी। ये मूर्तियाँ बनाने में दक्ष थे। यह कलासिद्धि संस्कृति थी।

संपन्नता के बाद भी इस सभ्यता में भव्यता के आडम्बर का अभाव था। यहाँ न भव्य प्रासाद है न भव्य मंदिर्। यहाँ राजाओं या महंतों की बड़ी समाधियाँ भी प्राप्त नहीं हुई हैं। छोटी नावें, छोटे औज़ार, छोटे घर यहाँ तक कि नरेश का मुकुट भी छोटा है। मकान के कमरे भी बहुत छोटे छोटे हैं। खाने-पीने, रहने, बड़े कोठार के बावज़ूद भव्यता का आडंबर नहीं दिखाई देता है।

उत्तर-2: डायरी लेखक जब अपनी डायरी लिखता है तो उसमे अपने आस-पास का वर्णन भी स्वाभाविकरूप से आ जाता है। ऐन ने जब डायरीलिखी तो उस समय द्वितीय विश्व युद्ध चला रहा था। जर्मनी ने हालैंड पर अधिकार कर लिया था। यहूदियों पर भयंकर अत्याचार हो रहे थे जिसके कारण ऐन का जीवन भी अतिशय कष्टमय हो गया था। हिटलर की नाजी सेना ने यहूदियों को कैद कर यातना शिविरों में डालकर यातनाएँ दी। उन्हें गैस चैंबर में डालकर मौत के घाट उतार दिया जाता था। कई यहूदी भयग्रस्त होकर अज्ञातवास मेंचले गए जहाँ उन्हें अमानवीय परिस्थितियों में जीना पड़ा| युद्धके समय बिजली राशन-पानी का अभाव था। अज्ञातवास में उन्हें सेन्धमारों से भी निबटना पड़ा।। उनकी यहूदी संस्कृति को भी कुचल डाला गया।

प्रश्न अभ्यास

प्रश्न 1. यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ ढल सकने में सफल होती है लेकिन यशोधर बाबू असफल रहते हैं। ऐसा क्यों?

2- 'जूझ'-शीर्षक के औचित्य पर विचार करते हुए स्पष्ट कीजिए कि क्या यह शीर्षक कथा नायक की किसी केंद्रीय चारित्रिक विषेषता को उजागर करता है?

3-'जूझ'-कहानी प्रतिकूल परिस्थितियों से संघर्ष की प्रेरक कथा है। पाठ के आधार पर कथा नायक के व्यक्तित्व को उजागर कीजिए।

4- श्री सौंदलगेकर जी के अध्यापन की उन विशेषताओं को रेखांकित करें, जिन्होंने कविताओं के प्रति लेखक के मन में रुचि जगाई।

5-कथा नायक आनंदा के जीवन को सबसे अधिक उनके मराठी अध्यापक ने प्रभावित किया। क्या आप इस कथन से सहमत हैं? पाठ के आधारपर स्पष्ट कीजिए।

6- "सिंधु सभ्यता की खूबी उसका सौंदर्य है, जो राज-पोषित या धर्म-पोषित न होकर समाज पोषित था"। लेखक को ऐसा क्यों लगता है?

7 - काश! कोई तो ऐसा होता जो मेरी भावनाओं को गंभीरता से समझ पाता। अफ़सोस ऐसा व्यक्ति मुझे अब तक नहीं मिला'। क्या आपको लगता है कि ऐन के इस कथन में उसके डायरीलेखन का कारण छिपा है?

8-ऐन फ्रैंक ने डायरी 'किट्टी'(एक निर्जीव गुड़िया) को सम्बोधित करके लिखा है। इस लेखन के पीछे क्या कारण रहा होगा? डायरी के पन्ने -पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

9- ऐन की डायरी उसके निजी जीवन की भावनात्मक उथल-पुथल के साथ उस दौर का जीवंत दस्तावेज है'। पाठ के आधार पर इस कथन की विवेचना कीजिए।

****

आगामी AISSCE-16 परीक्षा के लिए अशेष शुभकामनाएँ !!!!!